जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 47 संख्याः 170 प्रभात बीकानेर, सोमवार 12 जनवरी, 2026 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

# कभी भी हो सकता है, ग्रीनलैंड पर अमेरिका का हमला

## ट्रंप को डर है कि देर होने से रूस व चीन को ग्रीनलैंड में दखल देने का मौका मिल जाएगा

■ यह चर्चा है कि ट्रंप ने स्पेशल फोर्सेज़ के प्रमुखों को ग्रीनलैंड पर हमले का प्लान बनाने को कहा है, पर सेना अभी तक इस हमले पर एक राय नहीं है।

वॉशिंगटन, 11 जनवरी। ग्रीनलैंड पर अमेरिका का सैन्य हमला बहुत जल्द हो सकता है। यह आशंका जताई जा रही है क्योंकि एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने अपनी स्पेशल फोर्सेज के प्रमुखों को ग्रीनलैंड पर हमले का प्लान बनाने को कहा है। ट्रंप ने कथित तौर पर अमेरिकी सेना के शीर्ष अफसरों से कहा है कि उनको ग्रीनलैंड में कार्रवाई करनी चाहिए क्योंकि इस मामले में ज्यादा देरी ठीक नहीं है। ट्रंप को लगता है कि ग्रीनलैंड पर देर करने से चीन और रूस को वहां दखल का मौका मिल सकता है। कई एक्सपर्ट नेअगले कुछ दिनों या घंटों में ही हमले की आशंका जताई है।

यह रिपोर्ट ट्रंप के उस बयान के बाद आई है, जिसमें उन्होंने जोर देकर कहा है कि ग्रीनलैंड पर कब्जा किया जाएगा। ट्रंप ने ग्रीनलैंड पर कब्जे की इच्छा के पीछे अमेरिका की सुरक्षा का हवाला दिया है। ट्रंप का तर्क है कि अमेरिका ऐसा नहीं करेगा तो चीन या रूस यह कर सकते हैं। ट्रंप प्रशासन की ओर से कहा गया है कि वह ग्रीनलैंड पर नियंत्रण चाहते हैं और इसके लिए सैन्य विकल्प खुला है। ग्रीनलैंड फिलहाल डेनमार्क का अर्ध-स्वायत्त क्षेत्र है।

डेली मेल ने सूत्रों के हवाले से दावा किया है कि ट्रंप जल्दी से जल्दी ग्रीनलैंड पर कब्जे का प्लान चाहते हैं। ट्रंप हमले की योजना के लिए जॉइंट स्पेशल ऑपरेशंस कमांड पर भरोसा कर रहे हैं। हालांकि जॉइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ इससे सहमत नहीं हैं। दूसरी ओर राजनीतिक सलाहकार स्टीफन मिल ग्रीनलैंड पर कार्रवाई चाहते हैं।

रिपोर्ट में डिप्लोमैटिक केबल के हवाले से कहा गया है कि घरेलू राजनीतिक कारणों से ट्रंप एक ऐसी स्थिति बना सकते हैं, जो बाद में समझौते की तरफ मुड़े। यूरोपीय अधिकारियों को डर है कि ट्रंप के लिए मिड-टर्म से पहले मौके खत्म हो रहे हैं, इसलिए वह जल्द ही ग्रीनलैंड में कार्रवाई कर सकते हैं। हालांकि अभी सेना में इस पर एकराय नहीं है।

ट्रंप कहते हैं कि अमेरिका को ग्रीनलैंड की रक्षा करनी होगी क्योंकि उस पर रूस और चीन की नजर है। ग्रीनलैंड की रक्षा के लिए हमें उसे अपने नियंत्रण में लेने की जरूरत है।

डोनाल्ड ट्रंप ने बीते साल और हालिया दिनों में कई बार कहा है कि ग्रीनलैंड का अमेरिका के नियंत्रण में होना उनके देश की सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी है। दूसरी ओर डेनमार्क और ग्रीनलैंड दोनों ने कहा है कि वह इसके लिए तैयार नहीं है। डेनमार्क सरकार ने अमेरिका के सैन्य हमले की सूरत को नाटो के खत्म हो जाने तक की धमकी दी है। ग्रीनलैंड उत्तर अमेरिका और आर्कटिक के बीच है। यहां के लोग खुद अपना शासन चलाते हैं लेकिन विदेश नीति और सेना डेनमार्क के पास है। अपनी विशेष स्थिति (लोकेशन) की वजह से ग्रीनलैंड मिसाइल हमलों की स्थिति में अर्ली वॉर्निंग सिस्टम के लिए अहम है। जहाजों की निगरानी के लिए भी यह रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

## संघ बदल नहीं रहा, विकसित हो रहा है- भागवत

नई दिल्ली, 11 जनवरी। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने रविवार (11 जनवरी) को कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) बदल नहीं रहा है, बल्कि समय के साथ धीरे-धीरे विकसित हो रहा है। मोहन भागवत दिल्ली स्थित संगठन के कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में आने वाली फिल्म शतक के गाने के

■ संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि डॉ. हेडगेवार ने अपना जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित किया था।

एल्बम को लॉन्च किया गया। यह फिल्म आरएसएस के 100 साल के सफर की कहानी बताती है।

आरएसएस प्रमुख भागवत ने अपने संबोधन में कहा, संगठन (आरएसएस) अपनी शताब्दी मना रहा है। लेकिन जैसे-जैसे संगठन विकसित होता है और नए रूप लेता है, लोग इसे बदलते हुए देखते हैं। हालांकि यह असल में बदल नहीं रहा है बस धीरे-धीरे सामने आ रहा है। इस मौके पर सिंगर सुखविंदर सिंह, डायरेक्टर आशीष मल्ल, को-प्रोड्यूसर आशीष तिवारी और आरएसएस पदाधिकारी भैयाजी जोशी मौजूद रहे। उन्होंने आगे कहा, जैसे एक बीज से अंकुर निकलता है और फलों और फूलों से लदा हुआ परिपक्व पेड़ का एक अलग रूप होता है, ये

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

# सेना ने जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों की सैटेलाइट फोन पर बातचीत पकड़ी

## गणतंत्र दिवस के दौरान शांति के लिए इंटरनैशनल बॉर्डर पर सर्च ऑपरेशन शुरु

■ जिस स्थान पर कम्युनिकेशन ट्रेस हुआ, वह अंतर्राष्ट्रीय सीमा से मात्र एक किलोमीटर दूर है। सुरक्षा बलों ने जम्मू के पहाड़ी इलाकों सहित पूरे क्षेत्र में तलाशी व घेराबंदी अभियान तेज कर दिया।

श्रीनगर, 11 जनवरी। जम्मू-कश्मीर के कनाचक इलाके में संदिग्ध सैटेलाइट फोन कम्युनिकेशन ट्रेस किया गया है। सेना ने इंटरनेशनल बॉर्डर पर सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। सैटेलाइट फोन के जरिए आतंकियों की बातचीत ट्रेस से कई जानकारियां सामने आई हैं।

बताया जा रहा है ये इलाका इंटरनेशनल बॉर्डर से महज एक किलोमीटर की दूरी पर है। बातचीत इंटरसेप्ट होने के तुरंत बाद सुरक्षाबल हरकत में आए और सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। चप्पे-चप्पे पर सुरक्षाकर्मी तैनात हैं।

अधिकारियों ने कहा कि संदिग्ध आतंकवादियों द्वारा किए गए संचार का पता थुराया सैटलाइट उपकरण से लगाया गया, जिसके बाद जम्मू - कश्मीर पुलिस के विशेष अभियान समूह, सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और सेना द्वारा संयुक्त रूप से सर्च ऑपरेशन चलाया है।

जम्मू के बाहरी इलाके में स्थित कानाचक, अंतरराष्ट्रीय सीमा से महज एक किलोमीटर दूर है। पहले आतंकवादियों द्वारा सीमा पार से घुसपैठ के मार्ग के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

सुरक्षा बलों ने जम्मू के पहाड़ी इलाकों समेत पूरे क्षेत्र में तलाशी और घेराबंदी अभियान तेज कर दिया है, ताकि क्षेत्र में सक्रिय माने जा रहे लगभग तीन दर्जन आतंकवादियों का पता लगाकर उन्हें निष्क्रिय किया जा सके। अधिकारी ने कहा कि आगामी गणतंत्र दिवस के दौरान शांतिपूर्ण समारोह सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा एजेंसियों द्वारा उठाए गए कदमों के तहत ये सर्च ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं।

# तमिलनाडु में गठबंधन सरकार नहीं होगी- डीएमके

## कांग्रेस के सत्ता में साझेदारी के प्रस्ताव को डीएमके ने अस्वीकार किया

■ डीएमके नेताओं का कहना है कि उनकी पार्टी ने पहले भी चुनाव में अन्य दलों के साथ गठबंधन किया पर सरकार हमेशा अकेले बनाई।

दिंडीगुल (तमिलनाडु), 11 जनवरी। द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) के वरिष्ठ नेता और राज्य मंत्री आई. पेरियासामी ने रविवार को तमिलनाडु में गठबंधन सरकार की संभावना को खारिज किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री एमके स्टालिन अपने सहयोगियों के साथ सत्ता साझेदारी के पक्ष में नहीं हैं।

पेरियासामी ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि सत्ता में हिस्सेदारी की मांग करना तमिलनाडु कांग्रेस का अधिकार है। लेकिन डीएमके हमेशा इस तरह की मांग के पक्ष में नहीं रही है। उन्होंने कहा, कभी भी गठबंधन सरकार नहीं बनी। राज्य हमेशा का नेतृत्व हमेशा डीएमके ने ही किया है। उन्होंने कहा कि पार्टी इस रुख पर अडिग है और मुख्यमंत्री इस पर स्पष्ट हैं कि कोई गठबंधन सरकार नहीं होगी।

तमिलनाडु कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव के मद्देनजर डीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन के जीतने पर सत्ता में हिस्सेदारी की मांग दोहराई है। कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने हाल ही में कहा था कि अब सत्ता में हिस्सेदारी पर चर्चा करने का समय है।

तमिलनाडु कांग्रेस ने कहा है कि अगर गठबंधन जीतता है तो उन्हें सत्ता में हिस्सा मिलना चाहिए।

1967 से डीएमके और एआईएडीएमके ने हमेशा अपनी सरकार बनाई है, भले ही चुनावों में अन्य दलों के साथ गठबंधन किया हो।

1952 में पहली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पूर्ण बहुमत नहीं ला सकी थी। उस समय गैर-कांग्रेसी नेताओं को सरकार में जगह मिली थी।

2006-2011 में भी डीएमके ने सहयोगियों के समर्थन से पूरी पांच साल की सरकार चलाई, लेकिन सत्ता साझा नहीं की।

## सोनिया गांधी को अस्पताल से छुट्टी मिली

नयी दिल्ली, 11 जनवरी। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष और संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन प्रमुख सोनिया गांधी को रविवार शाम सर गंगाराम अस्पताल से सेहत में सुधार होने के बाद छुट्टी मिल

■ प्रदूषण के कारण अस्थमा बढ़ने से वे 5 जनवरी को गंगाराम अस्पताल में भर्ती हुई थीं।

गयी। ठंड और दिल्ली प्रदूषण के कारण अस्थमा से जुड़े लक्षण बढ़ ने पर गांधी को पांच जनवरी को सर गंगाराम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

# केरल में कांग्रेस व वामपंथी दशकों से मैच फिक्सिंग कर रहे हैं- अमित शाह

## केन्द्रीय गृह मंत्री ने केरल के स्थानीय निकायों के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों की बैठक ली

■ अमित शाह ने कहा कि पश्चिम बंगाल में कांग्रेस और कम्युनिस्ट शून्य सीटों की ओर बढ़ रहे हैं तथा वहाँ भाजपा सरकार बनाने की स्थिति में है।

तिरुवनंतपुरम, 11 जनवरी। केंद्रीय गृह मंत्री और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता अमित शाह ने रविवार को केरल में सत्तारूढ़ वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) और विपक्षी संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) पर तीखा हमला करते हुए उन पर मैच फिक्सिंग, परस्पर समझौते और भ्रष्टाचार के आरोप लगाए। उन्होंने दावा किया कि केरल में निश्चित तौर पर भाजपा की सरकार बनेगी।

शाह ने यहां स्थानीय निकायों के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि एलडीएफ और यूडीएफ दशकों से राजनीतिक नाटक कर रहे हैं और जब भी चुनावी गणित की जरूरत पड़ी, दोनों एक-दूसरे के बचाव में खड़े हुए। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले पांच दशकों से यह चलन बना हुआ है कि जब कांग्रेस बहुमत हासिल नहीं कर पाती, तो वामपंथी उसका समर्थन करते हैं।

उन्होंने कहा कि इसी तरह जब त्रिपुरा में वामपंथियों को राजनीतिक समर्थन की जरूरत पड़ी, तो कांग्रेस ने उन्हें समर्थन दिया। शाह ने दावा किया कि पश्चिम बंगाल और केरल में एक साथ चुनाव होने के कारण ही कांग्रेस और कम्युनिस्ट वहां औपचारिक गठबंधन में नहीं आए, अन्यथा दोनों वहां भी साथ चुनाव लड़ते।

शाह ने कहा कि पश्चिम बंगाल में कांग्रेस और कम्युनिस्ट दोनों शून्य सीटों की ओर बढ़ रहे हैं और वहां भाजपा सरकार बनाने की स्थिति में है। केरल में भाजपा के संगठनात्मक विस्तार का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पार्टी ने अब तक 30 ग्राम पंचायतें और दो नगरपालिकाएं जीती हैं। उन्होंने कहा कि तिरुवनंतपुरम नगर निगम में आज भाजपा का मेयर होना पार्टी की राजनीतिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। शाह ने कहा कि भविष्य भाजपा का है और वह दिन आएगा जब केरल में भाजपा का मुख्यमंत्री होगा।

उन्होंने कहा कि यह सफलता भाजपा कार्यकर्ताओं के त्याग और समर्पण की बदौलत संभव हुई है। शाह ने राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में बात करते हुए कहा कि 1984 में लोकसभा में भाजपा के केवल दो सांसद थे, जबकि 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पार्टी लगातार तीसरी बार केंद्र में सरकार बना चुकी है।

उन्होंने असम का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां भी भाजपा कभी केवल दो विधानसभा सीटों पर सिमटी थी, लेकिन आज वह तीसरी बार सरकार बनाने की ओर बढ़ रही है। शाह ने आरोप लगाया कि एलडीएफ और यूडीएफ न तो आस्था की रक्षा कर सकते हैं, न केरल की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं और न ही राज्य का विकास कर सकते हैं।

शाह ने यह भी कहा कि उन्होंने तिरुवनंतपुरम नगर निगम में भाजपा मेयर बनने पर पद्मनाभस्वामी मंदिर में दर्शन करने का संकल्प लिया था और उनकी यह यात्रा उसी संकल्प की पूर्ति है।

## प्रधानमंत्री सोमनाथ में शौर्य यात्रा में शामिल हुए

सोमनाथ, 11 जनवरी। पीएम मोदी आज (रविवार को) अपने सोमनाथ के दौरे के दौरान शौर्य यात्रा में शामिल हुए। उन्होंने सोमनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की और मंदिर की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने वाले लोगों को श्रद्धांजलि दी। पीएम मोदी ने कहा कि मैं अपना बहुत बड़ा सौभाग्य मानता हूं कि सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में मुझे सोमनाथ

■ उन्होंने कहा, एक हजार साल पहले हमारे पुरखों ने इस जगह के लिए जान की बाजी लगा दी थी।

स्वाभिमान पर्व में सक्रिय सेवा का अवसर मिला है। आज देश के कोने-कोने से लाखों लोग हमारे साथ जुड़े हैं, उन सबको मेरी तरफ से जय सोमनाथ।

प्रधानमंत्री ने कहा, "ये समय अद्भुत है, ये वातावरण अद्भुत है, ये उत्सव अद्भुत है। एक ओर देवाधिदेव महादेव, दूसरी ओर समुद्र की लहरें, सूर्य की किरणें, मंत्रों की ये गूंज, आस्था का ये उफान और इस दिव्य वातावरण में भगवान सोमनाथ के भक्तों की उपस्थिति इस अवसर को भव्य और दिव्य बना रही है।"

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज से करीब 1 हजार पहले इसी जगह पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

# एक्स ने गलती मानी, महिलाओं के 3500 अश्लील कंटैंट हटाए

## इंटरनेट मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स ने भारत के कानून के हिसाब से काम करने का भरोसा दिलाया

■ इलैक्ट्रॉनिक्स व आईटी मंत्रालय ने महिलाओं के अश्लील कंटैंट 72 घंटे में हटाने के लिए एक्स को निर्देश दिए थे।

नई दिल्ली, 11 जनवरी। सरकार की आपत्तियों के बाद इंटरनेट मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स ने महिलाओं के अश्लील पोस्ट के मामले में अपनी गलती मानते हुए 3500 कंटेंट को हटा दिया है। इस प्रकार के कंटेंट का सृजन करने वाले 600 से अधिक खातों को बंद भी कर दिया है। इलेक्ट्रॉनिक्स व आईटी मंत्रालय की तरफ से महिलाओं के अश्लील कंटेंट को लेकर आपत्ति उठाई गई थी और एक्स को 72 घंटे के भीतर इन कंटेंट को हटाते हुए कार्रवाई का निर्देश दिया गया था।

मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक अमेरिकी उद्योगपति एलन मस्क के प्लेटफार्म एक्स ने इस मामले में अपनी गलती मानते हुए इस बात का आश्वासन दिया है कि भारत में एक्स यहां के कानून के हिसाब से काम करेगा। मंत्रालय ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

# भारत आज एडवांस सैटेलाइट लॉन्च करेगा

नई दिल्ली, 11 जनवरी। भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि की ओर बढ़ रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) साल 2026 के अपने लॉन्चिंग कैलेंडर की शुरुआत पीएसएलवी-सी62मिशन से करने जा रहा है। इस मिशन के तहत एक खास पृथ्वी अवलोकन सैटेलाइट लॉन्च किया जाएगा, जिसे भारत की सुरक्षा और निगरानी क्षमताओं के लिए बेहद अहम माना जा रहा है।

इसरो का पीएसएलवी-सी62मिशन 12 जनवरी को सुबह 10:17 बजे लॉन्च होगा। यह लॉन्चिंग श्रीहरिकोटा

■ इस सैटेलाइट को भारत की सुरक्षा व निगरानी क्षमताओं के लिए अहम माना जा रहा है।

स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से की जाएगी। इस मिशन में एडवांस अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट ईओएस-एन1 को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा, जिसे अन्वेषा नाम दिया गया है। इसे भारत के लिए आसमान में एक और आंख माना जा रहा है। अन्वेषा एक विशेष इमेजिंग सैटेलाइट है, जिसे डीआरडीओ ने विकसित किया है। इसमें दुश्मन के ठिकानों की सटीक तस्वीरें लेने और मानचित्रण करने की उन्नत क्षमता है। यह सैटेलाइट अंतरिक्ष से भारत की निगरानी और सुरक्षा को और मजबूत करेगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

# महेन्द्रजीत मालवीया के वापस कांग्रेस में जाने की चचाएं चलीं

## उनके समर्थक कहते हैं कि मालवीया कुछ समय से भाजपा में उपेक्षित महसूस कर रहे थे

■ जिला परिषद की अंतिम बैठक में बाँसवाड़ा विधायक अर्जुन बामनिया ने जिला प्रमुख रेशम मालवीया को खुले रूप में कांग्रेस में वापस आने का आमंत्रण दिया था। रेशम मालवीया की सधी हुई प्रतिक्रिया से भी इन चर्चाओं को बल मिला था।

बांसवाड़ा, (निसं)। पूर्व केबिनेट मंत्री एवं वागड़ क्षेत्र के दिग्गज जनजाति नेता महेन्द्रजीत सिंह मालवीया के कांग्रेस में वापसी के संकेत राजनीतिक क्षेत्र में तूफान मच गया है। कुछ टीवी चैनलों एवं सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को मालवीया के कांग्रेस में वापसी के संकेत मिले तो चारों ओर चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया।

ध्यान रहे कि लोकसभा चुनाव से पूर्व मालवीया ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया था एवं भाजपा ने उन्हें सांसद पद का प्रत्याशी बनाया। इतना ही नहीं, उनके रिश्तेदार को बागीदौरा से विधानसभा प्रत्याशी भी बनाया था लेकिन दोनों को ही हार का सामना करना पड़ा। लंबे समय से चर्चाएं चल रही थीं कि मालवीया को किसी पद से नवाज़ा जायेगा। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री की बागीदौरा क्षेत्र की यात्रा के दौरान इन चर्चाओं को गर्म किया गया था।

सूत्र बताते हैं कि लंबे समय से मालवीया भाजपा में अपने कद के अनुरूप सम्मान नहीं ले पा रहे थे। ऐसे में चर्चाएं चल पडी थी कि उन्हें उपेक्षित किया जा रहा है। इधर मालवीया के साथ भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता लेने वाले कांग्रेसजनों को भी भाजपा की रीति-नीति समझ नहीं आ रही थी। जिला परिषद् की अंतिम बैठक में तो बांसवाडा विधायक अर्जुन सिंह बामनिया ने जिला प्रमुख रेशम मालवीया को खुले तौर पर वापस आने का आमंत्रण तक दे दिया था तब रेशम मालवीया ने भी इस प्रस्ताव को लेकर अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया सधे हुए शब्दों में दी थी। तब लगने लगा था कि कोई न कोई खिचड़ी पक रही है।

पूर्व केबिनेट मंत्री महेन्द्रजीत सिंह मालवीया और बांसवाडा विधायक व पूर्व राज्यमंत्री अर्जुन सिंह बामनिया कभी एक-दूसरे के खास हुआ करते थे लेकिन विधानसभा चुनाव के बाद पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मालवीया का पत्ता काटते हुए अर्जुन सिंह बामनिया को राज्यमंत्री पद से नवाजा था तभी से दोनों के बीच खटास महसूस की जाने लगी। इधर गहलोत और पायलट के बीच में विवाद हुआ तो इस विवाद के बीच गहलोत ने मालवीया को पुनः केबिनेट मंत्री पद से नवाजा। बताया जाता है कि इसके बाद हुए विधानसभा चुनाव में मालवीया को नेता प्रतिपक्ष बनाने का आश्वासन दिया गया था लेकिन एन समय में उन्हें धोखा मिला। इसके बाद मालवीया ने भाजपा का दामन थाम लिया लेकिन लोकसभा एवं विधानसभा सीट पर हार के बाद भाजपाईयों के संभवतः तेवर बदल गये और इसी के चलते मालवीया अपने को उपेक्षित समझने लगे। इधर कांग्रेस के पुराने साथियों ने भी संभवतः उन्हें घर वापसी के लिये प्रेरित किया। सूत्र तो यहां तक बताते हैं कि प्रदेश स्तर पर लंबी खिचड़ी पक रही है इसी के चलते मालवीया की वापसी की राहें बनने लगी।

# अमेरिका ने सीरिया में आतंकवादी आईएस के ठिकानों पर हमले किए

वॉशिंगटन, 11 जनवरी। अमेरिका ने सीरिया में आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट (आईएस) के कई ठिकानों पर बड़े पैमाने पर हमले किए हैं। अमरीकी सेंट्रल कमांड ने शनिवार को यह जानकारी दी।

कमांड ने एक्स पर पोस्ट किया, "आज, दोपहर लगभग 12:30 बजे अमरीकी सेंट्रल कमांड की सेनाओं ने सहयोगी

■ अमेरिकी सैंट्रल कमांड के अनुसार, ये हमले, 13 दिसंबर को सीरिया के पल्मायरा में अमेरिका व सीरिया की सेनाओं पर हुए जानलेवा आई.एस. हमले के जवाब में किए गए।

सेनाओं के साथ मिलकर पूरे सीरिया में आईएस के कई ठिकानों पर बड़े पैमाने पर हमले किए।"

कमांड ने कहा कि ये हमले ऑपरेशन हॉकआई स्ट्राइक का हिस्सा थे, जिसे 13 दिसंबर को सीरिया के पल्मायरा में अमेरिका और सीरियाई सेनाओं पर हुए जानलेवा आईएस हमले के जवाब में 19 दिसंबर को शुरू किया गया था। हमले में आईएस के एक आतंकवादी ने घात लगाकर हमला किया, जिसमें दो अमरीकी सैनिक और एक अमरीकी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

## विचार बिन्दु

बुद्धि के सिवाय विचार प्रचार का कोई दूसरा शस्त्र नहीं है, क्योंकि ज्ञान ही अन्याय को मिटा सकता है। –शंकराचार्य

# जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय

बाबा तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा था–बड़ अधिकार दच्छ जब पावा। अति अभिनामुहृदयँ तब आवा।।/ नहिंकोउ अस जनमा जग माहीं। प्रभुता पाइजाहि मद नाहीं।। अर्थात जब दक्ष ने इतना बड़ा अधिकार पाया, तब उनके हृदय में अत्यंत अभिमान आ गया। जगत् में ऐसा कोई नहीं पैदा हुआ जिसको प्रभुता पाकर मद न हो। निश्चय ही तुलसी एक ख़ास संदर्भ में यह बात कह रहे थे, अन्यथा भारतीय जीवन पद्धति तो सदा इसी बात का आग्रह करती आई है कि प्रभुता की पहचान विनम्रता से होती है। ऐसे अनेक प्रसंग हम पढ़ते सुनते आए हैं जब किसी उच्च पदस्थ ने अतिशय विनम्रता का प्रदर्शन किया। भारतीय राजनीति में भी हम गांधी–नेहरु–शास्त्री–राजेंद्र प्रसाद जैसे अनके महान लोगों को देख चुके हैं जिन्हें अभिमान लेशमात्र भी छू नहीं गया था। ये कुछ नाम तो ऐसे हैं जो हरेक को हर पल याद आते रहते हैं, इनके अतिरिक्त भी न जाने कितने बड़े और महान लोग हुए हैं जो पदजन्य अहंकार से मुक्त रहे हैं। हमारे यहां तो दिखावा करने वाले या अहंकारी को सदा ही थोथा चना बाजे घना कहकर नकारा गया है। पद का अहंकार दिखाने वाले के लिए रहीम दास ने क्या खूब कहा था: जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय।/ प्यादे सोंफरजीभयो, टेढ़ो–टेढ़ो जाय।।

लेकिन हम ऐसे समय में रह रहे हैं जहां हर कोई अपने महत्त्व को दिखाने के लिए व्यग्र नज़र आता है। न केवल व्यग्र नज़र आता है, उसे बेझिझक दिखा भी देता है। लगता है अब विनम्रता कोई मूल्य नहीं रह गया है। उसकी जगह उठाता, आक्रामकता और अशिष्टता ने ले ली है। अभी हाल में ऐसा ही एक प्रसंग सामने आया है जिसने हर संवेदनशील व्यक्ति को व्यथित किया है। हुआ यह कि छत्तीसगढ़ के दूसरे बड़े शहर बिलासपुर में, जिसे वहां अवस्थित राज्य के उच्च न्यायालय की वजह से उस शहर को राज्य की न्यायधानी भी कहा जाता है, साहित्य अकादेमी दिल्ली और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में समकालीन 'हिंदी कहानी: बदलते जीवन संदर्भ' पर इस विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के बैनर तले एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में हिंदीवके अनेक सुपरिचित और ख्यात साहित्यकार भी उपस्थित थे। वहां अन्य लोगों के अलावा हिंदी के बड़े और सम्मानित कथाकार मनोज़ रूपड़ा भी मौज़ूद थे। विश्वविद्यालय के कुलपति माइक पर थे और जैसा कि सोशल मीडिया पर उपलब्ध वीडियो क्लिप से ज्ञात हो रहा है वे हल्के–फुल्के अंदाज़ में अपनी बात कह रहे थे। यकायक वे मनोज रूपड़ा की तरफ मुखातिब होते हैं और उनसे पूछते हैं कि 'कहीं आप मेरी बातों से बोर तो नहीं हो रहे हैं? अब कुलपति की यह हरकत सामान्य तो नहीं कही जाएगी। उन्होंने मनोज रूपड़ा को सम्बोधित कर यह बात कही तो मनोज ने भी सहज भाव से जवाब दे दिया कि 'आप विषय पर नहीं बोल रहे हैं। अब यह कोई असामान्य उत्तर नहीं था। बात को यहीं ख़त्म हो जाना चाहिए था। वैसे कुलपति को किसी एक व्यक्ति को लक्ष्य करके ऐसा कहना ही नहीं चाहिए था, और अगर कह दिया तो फिर उन्हें इस बात के लिए भी सहज भाव से तैयार रहना चाहिए था कि उनकी बात का कुछ न कुछ जवाब दिया जाएगा।

लेकिन यह लिखते हुए मैं इस बात को शायद भूल गया कि पूछने वाला एक विश्वविद्यालय का सर्व शक्तिमान कुलपति था और जिससे पूछा गया वह एक मामूली कहानीकार। कुलपति जी ने तो उससे सवाल कर उसकामान बढ़ाया था, और वह नाशुक्रा कहानीकार ऐसा जवाब देने की धृष्टता कर बैठा! कुलपति जी का बड़ा आदमी तुरंत जाग खड़ा हुआ और उसने मनोज रूपड़ा का अपमान करते हुए कि इसको यहां किसने बुलाया है, सार्वजनिक रूप से उन्हें बाहर जाने के लिए कह दिया। न केवल इतना, कुलपति ने यहां तक कह डाला कि जो इनके साथ जाना चाहें वे भी बाहर चले जाएं!

**भारतीय राजनीति में भी हम गांधी-नेहरु-शास्त्री-राजेंद्र प्रसाद जैसे अनके महान लोगों को देख चुके हैं जिन्हें अभिमान लेशमात्र भी छू नहीं गया था। ये कुछ नाम तो ऐसे हैं जो हरेक को हर पल याद आते रहते हैं, इनके अतिरिक्त भी न जाने कितने बड़े और महान लोग हुए हैं जो पदजन्य अहंकार से मुक्त रहे हैं। हमारे यहां तो दिखावा करने वाले या अहंकारी को सदा ही थोथा चना बाजे घना कहकर नकारा गया है।**

सच बात यह है कि किसी आमंत्रित अतिथि को बाहर जाने के लिए कहना किसी के भी अधिकार क्षेत्र में नहीं है। उस समय तक नहीं है जब तक कि वह अतिथि कोई ऐसी हरकत न कर बैठे जो सुरक्षा या गरिमा के प्रतिकूल हो। वीडियो क्लिप साक्षी है कि मनोज रूपड़ा ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। उन्होंने केवल कुलपति जी के सवाल का जवाब दिया। ऐसा भी नहीं कि कुलपति बोल रहे थे और मनोज ने उन्हें टोक दिया। अगर ऐसा किया गया होता तो भी हम मान लेते कि यह अनुचित कृत्य था। लेकिन ऐसा तो हुआ नहीं। शुरुआत तो ख़ुद कुलपति ने की, और जब उन्हें उनके सवाल का जवाब दिया गया तो वे न केवल उखड़ गए, अशिष्टता पर भी उतर आए। उनका यह कृत्य निहायत ही अनपेक्षित, अवांछित और अस्वीकार्य था। विश्वविद्यालय के कुलपति का पद बहुत बड़ा होता है। और जो व्यक्ति जितने बड़े पद पर आरूढ़ होता है उससे उतनी ही शालीनता और गंभीरता की अपेक्षा भी होती है। लेकिन वीडियो क्लिप से पता चलता है कि इन कुलपति जी का बर्ताव इन अपेक्षाओं से कोसों दूर का है। वे उखड़ गए हैं और एक अतिथि को, जिसके बारे में उन्हें यह भी पता है कि वह एक प्रतिष्ठित रचनाकार है, वे अपमानित करके बाहर जाने का हुक्म ज़ारी कर रहे हैं! न केवल उस एक व्यक्ति को, जो प्रसंगत: एक नामी कहानीकार भी है, अन्य अतिथियों को भी, जिनकी इस प्रकरण में कोई भूमिका ही नहीं थी।उनका बर्ताव कुल मिलाकर उसी किस्म का है जो हम बहुत बार अपने आस–पास उस समय देखते हैं जब कोई किसी से कहता है, तू जानता नहीं मैं कौन हूं! कुलपति जी भी बाकायदा बताते हैं कि वे कुलपति हैं और उनसे एक ख़ास लहज़े में बात की जानी चाहिए। मुझे फिर रहीम दास याद आने लगते हैं। उन्होंने लिखा था –बड़े बड़ाई ना करैं, बड़ो न बोलैं बोल।/ रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो...। लेकिन ये महाशय तो ख़ुद ही बता रहे हैं कि ये कुलपति हैं और इनसे कैसे बात करनी चाहिए! अगर इन्हें यह कहना पड़ा तो समझ लिया जाना चाहिए वे कुलपति जैसे नहीं थे। वैसे भी इनके वक्तव्य का जितना अंश इस वीडियो क्लिप में है वह भी इनके कुलपति होने की पुष्टि नहीं करता है। विश्वविद्यालय तो अभिव्यक्ति की आज़ादी के केंद्र होते हैं, या कहें उन्हें होना चाहिए। लेकिन अगर किसी विश्वविद्यालय का कुलपति अपने एक आमंत्रित सम्मानित अतिथि की सामान्य और आमंत्रित अभिव्यक्ति पर इस तरह का बर्ताव करे तो यह सोचकर केवल दुखी ही हुआ जा सकता है वह अपने विश्वविद्यालय को किस दिशा में ले जा रहा होगा।

एक विश्वविद्यालय के कुलपति का यह बर्ताव हमें न केवल व्यथित करता है, बहुत कुछ सोचने को भी मज़बूर करता है। आखिर हम कैसा समाज और कैसा देश बनते जा रहे हैं! जो लोग ताकतवर पदों पर हैं वे किसी भी तरह की असहमति की आवाज़ नहीं सुनना चाहते हैं। फिर एक कवि याद आता है। कबीरदास ने कहा था, 'निंदक नियरेराखिए, आंगन कुटी छवाय लेकिन अब वह समय आ गया है जब निंदक को धकियाया या कुचला जाना सामान्य होता जा रहा है। असहमति का अधिकार जैसे अतीत हो गया है। आप या तो हां में हां मिलाएं, या फिर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें। क्या यही वह राह है जिस पर चलकर हम विश्व गुरु बनने का सपना देखते हैं? विश्व गुरु की बात इसलिए कि कुलपति को हमारे राजस्थान में कुल गुरु कहा जाने लगा है। तो जो पूरे संस्थान का गुरु है अगर वही असहमति को सहन नहीं कर सकता है तो बाकियों से क्या उम्मीद की जाए?

साहित्य जगत में कुलपति के इस बर्ताव की व्यापक भर्त्सना हुई है। छतीसगढ़ के रायपुर शहर से तो यह ख़बर भी आई है कि वहां के लेखकों–संस्कृति कर्मियों और पत्रकारों ने सड़क पर आकर अपना रोष प्रकट किया है। यह ज़रूरी भी है। एक स्वस्थ समाज में अच्छे का स्वीकार और स्वागत तथा बुरे का अस्वीकार और उसकी भर्त्सना बहुत ज़रूरी है। अगर हम बुराई को देखकर चुप रह जाएंगे तो इससे बुराई को ही प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अलावा, जैसा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने शानदार निबंध (भीष्म को क्षमा नहीं किया गया) में भी कहा है, इतिहास भी हमें कभी माफ़ नहीं करेगा। एक नागरिक के रूप में हमारा यह कर्तव्य है कि अपने चारों तरफ जो भी ग़लत नज़र आए, उसके खिलाफ़ हम अपनी आवाज़ उठाएं। मेरे इस लेख को इसी विचार के आलोक में पढ़ा जाए!

**–अतिथि संपादक,**
**डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल**
**( शिक्षाविद और साहित्यकार )**

# कब्रिस्तान और ज़मीन का संकट : क्या भारत में भविष्य के टकराव की नींव रख सकता है?



सुनील दत्त गोयल

भारत आज जिस सबसे गंभीर संकट की ओर बढ़ रहा है, वह केवल बेरोज़गारी, महँगाई या पर्यावरण तक सीमित नहीं है। असल संकट ज़मीन का भी है। जनसंख्या बढ़ रही है, शहर फैलते जा रहे हैं, खेती की भूमि लगातार घट रही है और आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधन सीमित होते जा रहे हैं। ऐसे समय में यह प्रश्न अब टालना खतरनाक होगा कि क्या मृत्यु के बाद की हमारी व्यवस्थाएँ भी समय, तकनीक और ज़मीनी सच्चाई के अनुसार बदली जानी चाहिए या नहीं ?

यह विमर्श किसी धर्म, जाति या समुदाय के विरुद्ध नहीं है। यह एक राष्ट्रीय नीति, प्रशासनिक दूरदृष्टि और सामाजिक ज़िम्मेदारी से जुड़ा विषय है।

**कब्रिस्तानों का सीमांकन: आज की अनदेखी, कल का बड़ा विवाद**

भारत में मुस्लिम और ईसाई समाज में शवों को दफनाने की परंपरा है। यह उनकी आस्था का विषय है और इस पर कोई सवाल नहीं। समस्या परंपरा में नहीं, बल्कि उस पर प्रशासनिक नियंत्रण और कानूनी स्पष्टता के अभाव में है। देश के अनेक हिस्सों में कब्रिस्तान ऐसे हैं जिनका न तो स्पष्ट सीमांकन है और न ही उनका भूमि रिकॉर्ड पूरी तरह दर्ज है।

आज यह मुद्दा शांत दिखाई देता है, लेकिन भविष्य में यही अस्पष्टता भूमि विवाद, कब्जों और साम्प्रदायिक तनाव का कारण बन सकती है। इसलिए सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि देश के सभी कब्रिस्तानों का विधिवत सीमांकन हो और उनका कानूनी स्टेटस पूरी तरह स्पष्ट किया जाए।

आज भी भारत के बहुत से हिस्सों में कब्रिस्तानों में अवैध कब्जे और अतिक्रमणों की भरमार है। इनमें आए दिन कहीं न कहीं झगड़े–फसाद होते रहते हैं या विभिन्न न्यायालयों में इनके मुकदमे चल रहे हैं। यह इसका ज्वलंत उदाहरण है कि आने वाले समय में ये बड़े झगड़े और विवाद का कारण बन सकते हैं।

**पक्का कब्रिस्तान:** एक भावनात्मक मांग या भविष्य की समस्या?

एक बड़ा और व्यावहारिक प्रश्न यह भी है कि पक्के कब्रिस्तान की ज़मीन आखिर आएगी कहां से?

जब देश पहले ही आवास, अस्पताल, स्कूल, सड़क, उद्योग और बुनियादी ढांचे के लिए ज़मीन की भारी कमी झेल रहा है, तब स्थायी कब्रिस्तानों के विस्तार की मांग भविष्य में सीधे–सीधे भूमि संघर्ष को जन्म दे सकती है।

आज यदि इस प्रश्न पर नीति स्तर पर विचार नहीं किया गया, तो कल यह मुद्दा अदालतों से लेकर सड़कों तक जाएगा।

**मुस्लिम देशों से सीख: धर्म और व्यावहारिकता का संतुलन**

अक्सर यह कहा जाता है कि कब्रिस्तान पर चर्चा धार्मिक हस्तक्षेप है। लेकिन वास्तविकता यह है कि कई मुस्लिम एवं इसाई बहुल देशों में स्वयं पक्की कब्रों और स्थायी निर्माण पर रोक है।

उदाहरण के लिए सऊदी अरब में इस्लामी कानून की सख्त व्याख्या के तहत कब्रों पर सीमेंट, संगमरमर या स्थायी ढांचे की अनुमति नहीं है।

**यह नियम इसलिए बनाए गए ताकि:–**

ज़मीन स्थायी रूप से अवरुद्ध न हो, पीढ़ियों बाद भूमि विवाद न हों, मृत्यु के बाद भी समानता बनी रहे। यह दिखाता है कि धर्म और व्यावहारिकता एक–दूसरे के विरोधी नहीं हैं।

यूनाइटेड किंगडम और कई यूरोपीय देशों में शवदाह का चलन

ब्रिटेन सहित कई यूरोपीय देशों में 1960 के दशक से शवदाह की प्रथा दफन से अधिक लोकप्रिय हो चुकी है। पहले जहां भूमिगत दफन को प्राथमिकता थी, अब वहाँ भी आर्थिक, पर्यावरणीय और भूमि उपयोग के कारण शवदाह को प्राथमिकता दी जाती है।

हालाँकि यूरोप के दक्षिणी हिस्सों में अभी भी पारंपरिक दफन प्रचलित है, लेकिन उत्तर और पश्चिमी यूरोप में शवदाह का प्रचलन बढ़ गया है। उदाहरण के लिए स्वीडेन, डेनमार्क जैसे देशों में शवदाह का विकल्प आम माना जाता है।

**न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में शवदाह का चलन**

ब्रिटिश सांस्कृतिक प्रभाव वाले देशों जैसे न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में भी शवदाह की दर 70 प्रतिशत के आसपास है, जो आर्थिक और भूमि उपयोग के कारण लगातार बढ़ रही है। इन देशों में भूमि के उपयोग के दृष्टिकोण से और पारिवारिक आर्थिक बोझ को कम करने के कारण घर के पास बड़ी कब्रिस्तानों के बजाय शवदाह को एक व्यवहार्य विकल्प माना जाता है।

**इटली: कैथोलिक देश में बदलाव की लहर**

इतनी गहरी कैथोलिक परंपरा वाले देश इटली में भी अब पारंपरिक दफन से शवदाह की ओर तेजी से बदलाव देखा गया है। वहाँ 1995 में जहाँ कम ही लोग क्रेमेशन चुनते थे, 2023 में लगभग 38 प्रतिशत मौतों में शवदाह हुआ – एक सांस्कृतिक परिवर्तन को दर्शाता है।

यह खास तौर पर तब संभव हुआ जब कैथोलिक चर्च ने 1963 में शवदाह के बाद भी पारंपरिक ईसाई अंतिम संस्कार करने की अनुमति दी, जिससे मानसिक बाधा कम हुई और भूमि उपयोग की विवेकपूर्ण सोच को स्थान मिला।

**जापान: ज़मीन की कमी ने सोच बदलने को मजबूर किया**

यदि दुनिया में किसी देश ने ज़मीन की कमी को सबसे पहले गंभीरता से समझा, तो वह जापान है। जापान में भूमि अत्यंत सीमित है, आबादी घनी है और शहरीकरण अत्यधिक है। जापान सरकार ने मुस्लिम समाज से यह तक कह दिया है कि या तो वे दाह संस्कार करें अन्यथा वे शवों को अपने देश दफ़नाने के लिए वापस ले जा सकते हैं क्योंकि जापान के पास इतनी जमीन नहीं है। इसी कारण वहां परंपरागत दफन व्यवस्था को सरकार ने दशकों पहले अव्यावहारिक मान लिया।

**आज जापान में:–**

99 प्रतिशत से अधिक मामलों में इलेक्ट्रिक शवदाह अनिवार्य है

दफन की अनुमति केवल अत्यंत सीमित परिस्थितियों में दी जाती है

सरकार द्वारा नियंत्रित क्रेमेटोरियम सिस्टम है

राख को सीमित स्थान में सुरक्षित रखा जाता है

यह निर्णय किसी धार्मिक संघर्ष के कारण नहीं, बल्कि ज़मीन, पर्यावरण और शहरी सच्चाई को ध्यान में रखकर लिया गया। जापान ने यह स्वीकार किया कि भावनाओं से अधिक महत्वपूर्ण भविष्य की ज़रूरतें

**चीन: कानून, जनसंख्या और पर्यावरण का संयोजन**

चीन ने भी इसी प्रकार एक सख्त लेकिन दूरदर्शी नीति अपनाई। चीन की विशाल जनसंख्या और सीमित शहरी भूमि ने सरकार को मजबूर किया कि वह दफन व्यवस्था को नियंत्रित करे।

**चीन में:–**

कई प्रांतों में दफन पर प्रतिबंध या कड़ा नियंत्रण है

इलेक्ट्रिक और गैस शवदाह को कानूनी रूप से बढ़ावा दिया गया

ग्रीन फ्यूनरल नीति लागू की गई

कब्रों के आकार और संख्या पर कानूनी सीमा तय की गई

यह सब इसलिए किया गया ताकि:–

ज़मीन का दुरुपयोग न हो, भविष्य में पीढ़ियों को भूमि संकट न झेलना पड़े, सामाजिक स्थिरता बनी रहे।

चीन का अनुभव बताता है कि यदि सरकार स्पष्ट नीति बनाए, तो समाज समय के साथ उसे स्वीकार कर लेता है। भारत की स्थिति जापान और चीन से भी अधिक जटिल है। यहाँ जनसंख्या का दबाव अधिक है, सामाजिक और धार्मिक विविधता गहरी है और भूमि पहले ही अनेक आवश्यकताओं में बंटी हुई है। यदि अंतिम संस्कार जैसे विषय को पूरी तरह भावनाओं पर छोड़ दिया गया, तो भविष्य में कब्रिस्तान भी राजनीतिक और साम्प्रदायिक विवाद का बड़ा कारण बन सकते हैं।

समाधान की दृष्टि से देखें तो तकनीक भारत में भी उपलब्ध है। गैस और विद्युत शवदाह न केवल पर्यावरण के अनुकूल हैं, बल्कि लकड़ी की कटाई रोकते हैं और भूमि की बचत भी करते हैं। जयपुर में लाल कोठी विधानसभा क्षेत्र के पास संचालित गैस शवदाह गृह इसका व्यावहारिक उदाहरण है, जिसे जयपुर सिटीजन फ़ोरम द्वारा स्थापित किया गया है। लेखक स्वयं इस फ़ोरम के सदस्य हैं। यह उदाहरण सिद्ध करता है कि यदि इच्छाशक्ति हो, तो समाधान निकाले जा सकते हैं। एक और दुखद सच्चाई यह है कि आज भी कई श्मशान घाटों में जाति और समाज के आधार पर अलग–अलग दाह संस्कार स्थल बने हुए हैं, जबकि भारत का सर्वोच्च न्यायालय स्पष्ट रूप से कह चुका है कि मृत्यु के बाद सभी समान हैं। सरकार की ज़िम्मेदारी है कि इन निर्देशों की सख़्ती से पालना सुनिश्चित करे।

**निष्कर्ष:** धर्म नहीं, भविष्य केंद्र में होना चाहिए

यह पूरा विमर्श किसी धर्म के विरुद्ध नहीं है। यह उस भारत के पक्ष में है, जो आने वाली पीढ़ियों को भूमि विवाद, साम्प्रदायिक तनाव और पर्यावरणीय संकट विरासत में नहीं देना चाहता।

**अब समय आ गया है कि:–**

सभी कब्रिस्तानों का कानूनी सीमांकन हो तथा साथ ही उनकी पक्की चारदीवारी भी होना तय हो।

ज़मीन का स्टेटस स्पष्ट किया जाए

इलेक्ट्रिक और गैस शवदाह को नीति स्तर पर बढ़ावा मिले

मृत व्यक्ति केवल एक नश्वर शरीर होता है। उसके नाम पर न समाज बंटे और न भविष्य की ज़मीन झगड़ों में बदल जाए। विवेक, तकनीक और दूरदृष्टि ही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

**–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल, महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री पूर्व उपाध्यक्ष, जयपुर स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड जयपुर, राजस्थान**

# नरेन्द्रनाथ को स्वामी विवेकानंद बनाने का श्रेय राजस्थान को

## स्वामी विवेकानन्द की जयंती 12 जनवरी पर विशेष.......



शंकर अग्रवाल

यद्यपि स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकता के प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त के घर 12 जनवरी 1863 को नरेन्द्र नाथ के रूप में हुआ। मूल नाम नरेन्द्र नाथ व बाद में भारत भ्रमण करते हुए स्वामी विविदिशानन्द हुआ। विविदिशा का अर्थ होता है–जानने की इच्छा। जब उनका जानने का काल समाप्त हो रहा था तो खेतड़ी के महाराज अजीत सिंह जी ने कहा कि यह नाम बोलने में काफी कठिन है। आपको यदि आपत्ति नहीं हो तो कोई और नाम से पुकारे। इस पर नरेन्द्र नाथ ने कहा महाराज जैसी आपकी इच्छा, इस पर खेतड़ी महाराज अजीत सिंह जी ने इनका नाम विवेकानन्द रखा, जो विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ व अन्त तक इसी नाम से जाने गए। इस प्रकार नरेन्द्र नाथ को स्वामी विवेकानन्द बनाने का श्रेय राजस्थान को विशेषकर खेतड़ी महाराज को जाता है।

विश्वभर में स्वामी विवेकानन्द की प्रसिद्धि के पीछे भी खेतड़ी महाराज का बडा योगदान रहा। स्वामी जी पूरे भारत का भ्रमण करते हुए पवित्र सोमनाथ के दर्शन कर स्वामी जी पोरबन्दर पहुँचे। पोरबन्दर के राजा के विशेष आठाह पर वह उनके महल में रूके। पोरबन्दर की राजसभा में उस समय प्रसिद्ध वकील विद्वान पण्डित शंकर पाण्डूरंग भी थे। स्वामी जी वहीं रहकर उनसे पतंजलि महाभाष्य पढ़ने लगे। पण्डित पाण्डूरंग स्वामी जी के ज्ञान व तेजस्विता से अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने स्वामी जी को पश्चिम देशो में जाकर भारत के ज्ञान को फैलाने का आग्रह किया। स्वामी जी के मन में पाण्डूरंग जी की सलाह पर विदेश जाने का विचार गहराता गया व निरन्तर उस पर उनका चिन्तन चलता रहा। स्वामीजी द्वारका, खण्डवा, बैलगांव आदि स्थानों से होते हुए मद्रास व बाद में रामेष्वर और अन्त में कन्याकुमारी पहुंचे। यह उनकी यात्रा का अन्तिम चरण था। स्वामी जी पूरे भारत का भ्रमण कर चुके थे।

कन्याकुमारी के समुद्र में स्थित शिला पर व आत्ममंथन के लिए बैठ गये व तीन दिन तक एक ही मुद्रा में ध्यानावस्थित रहे। 25 दिसम्बर को उन्हें अपने कृत्य पथ का बोध हुआ एवं भारत भूमि की सेवा की आवश्यकता का भान हुआ। यह वही शिला थी, जिस पर आज कन्याकुमारी में विवेकानन्द शिला स्मारक बना हुआ है। स्वामी जी अब नई उर्जा लेकर मद्रास लौट आये। मद्रास में उनके शिष्यों ने कुछ धन उनकी विदेश यात्रा के लिए एकत्र किया, लेकिन स्वामी जी ने उसे स्वीकार नहीं किया। स्वामी जी ने कहा –वत्सगण मैं माता के हाथ में यंत्र मात्र हूँ, उनकी इच्छा होने पर वे स्वयं ही मुझे वहाँ भेज देंगी। इस धन को तुम दरिद्रनारायण की सेवा में लगा दो, देखूं माँ की क्या इच्छा है?

शिकागो की धर्मसभा में जाने के सम्बन्ध में अभी भी स्वामीजी के मन में अनिश्चितता थी। एक दिन स्वामीजी ने स्वप्न में देखा कि श्री रामकृष्णदेव दिव्य देह धारण किये हुए महासागर के ऊपर पैदल चले जा रहे हैं और उन्हें पीछे आने का हाथ से संकेत कर रहे हैं। अब उनके मन की सारी दुविधा निकल गई। अब तो श्री माताजी (श्री रामकृष्ण की धर्मपत्नी सारदा देवी) से आज्ञा लेनी शेष थी। उनका भी आशीष भरा पत्रोत्तर जब उन्हें मिल गया तो स्वामीजी पूरी तरह शिकागो यात्रा के लिये प्रस्तुत हो गये।

उधर खेतड़ी महाराज के यहाँ पुत्र रतन की प्राप्ति हुई। इस पर महाराज ने स्वामीजी को खोजने मुंशी जगमोहन लाल जी को भेजा, 21 अप्रेल 1893 को स्वामीजी मुंशी जगमोहन लाल के साथ खेतड़ी पहुँच गये तथा राजकुमार जयसिंह के जन्मोत्सव में शामिल हुए। शिकागो की सर्वधर्म परिषद में जाने के निश्चय की जानकारी स्वामीजी ने मुंशीजी को चेन्नई में ही दे दी थी। मुंशीजी ने भी यह आश्वासन स्वामीजी को दिया कि खेतड़ी नरेश यात्रा की सम्पूर्ण व्यवस्था कर देंगे। राजा अजीत सिंह को जब यह पता लगा तो वे बडे प्रसन्न हुए। जन्मोत्सव समारोह में ही राजाजी ने सभी आगन्तुकों को शिकागो के सम्मेलन और स्वामीजी के वहाँ जाने के उद्देश्य की जानकारी दी। इसी के साथ खेतड़ी नरेश ने स्वामीजी के यात्रा व्यय की राजकोष से सम्पूर्ण व्यवस्था भी की।

10 मई को स्वामीजी ने खेतड़ी से प्रस्थान किया। मुंशी जगमोहन लाल उनके साथ थे। मुम्बई में मुंशी जी ने स्वामीजी की यात्रा के लिये जरूरी सामान जुटाना शुरू किया। पानी के जहाज पर यात्रा होनी थी, अत: जहाज का प्रथम श्रेणी का टिकट मुंशी जी ने लिया। इसी के साथ राजाजी के आदेशानुसार मुंशी जी ने स्वामीजी के लिये एक भगवा रेशमी चोगा और भगवे रंग का रेशमी साफा भी बनवाया। स्वामीजी के विरोध के बाद भी मुंशी जी ने इस आग्रह से ये वस्त्र रखे कि परिषद में स्वामीजी ये ही वस्त्र पहनकर बोलेंगे। शिकागो परिषद में स्वामीजी उसी रेशमी चोगे तथा साफे के परिधान में ही रहे तथा बोले भी उन्हीं वस्त्रों में।

31 मई 1893 के दिन स्वामी जी ने मुम्बई बन्दरगाह से अमरीका के लिये प्रस्थान किया। स्वामीजी की प्रसिद्धि और उनके ईश्वरीय कार्य में शिकागो यात्रा की सम्पूर्ण व्यवस्था करना खेतड़ी नरेश का दूसरा बड़ा योगदान था। इस प्रकार जब शिकागो की धर्मसभा में भारत का डंका बज रहा था व स्वामीजी की जय–जयकार हो रही थी। अनेक विदेशी वक्ता स्वामीजी के निकट आकर उनसे चर्चा के इच्छुक थे। जहां स्वामीजी को बोलने का समय नहीं दे रहे थे, वहां भारतीय स्वामी का शंखनाद हो रहा था।

देश की आत्मा को जगाने के प्रयास का शीर्ष बिन्दु स्वामी विवेकानन्द का शिकागो की सर्व–धर्म परिषद में छा जाना था। शिकागो के उनके भाषणों को सुनकर एक श्रोता ने टिप्पणी भी की थी कि, भारत में अमरीका से किसी मिशनरी के जाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि भारत से ही मिशनरी अमरीका आनी चाहिये।

हिन्दू धर्म, जीवन–दर्शन और संस्कृति को पूरी विश्व में स्वामी विवेकानन्द ने प्रतिष्ठित कर दिया। वह हिन्दू जो पराधीन, हीन और पिछडा माना जाता था, वह एकदम से श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट बन गया। 'गर्व से कहो हम हिन्दू हैं', के स्वामीजी के आव्हान के बाद



भारत के लोगों को भी महसूस हुआ कि गर्व करने लायक उनके पास इतना है, जितना शेष दुनिया के पास भी नहीं है। श्री रामकृष्ण देव के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से स्वामी विवेकानन्द ने ऐसी महान वैचारिक एवं सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया। इसमें कोई संशय नहीं कि आचार्य शंकर के बाद चारों और व्याप्त संभ्रम को भेदकर एक प्रभावी वैचारिक आंदोलन की नींव स्वामी विवेकानन्द ने ही रखी। इसलिये हमारे राष्ट्र के पुनजार्गरण में स्वामी विवेकानन्द का योगदान अतुलनीय है।

यह श्रेय राजस्थान की धरा पर जन्मे खेतड़ी नरेश अजीत सिंह को ही जाता है कि उन्होने स्वामीजी की प्रतिभा को पहचान कर उनके शिकागो जाने की व्यवस्था की। इस यात्रा के अथवा शिकागो सम्मेलन के बाद स्वामी जी भारत के साथ–साथ पूरे विश्व के स्वामी व मार्गदर्शक बन गये। स्वामीजी ने स्वयं खेतड़ी की तीसरी यात्रा के दौरान स्वीकार किया कि उन्होंने भारत के उत्पादन के लिए जो कुछ किया है, वह सम्भव नहीं होता, यदि खेतड़ी के राजा अजीत सिंह उन्हें नहीं मिलते।

**– सी.ए. शंकर अग्रवाल**

## राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

**सोमवार 12 जनवरी, 2026**

माघ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, स्वाती नक्षत्र रात्रि 9:05 तक, धृति योग सायं 6:12 तक, गर करण दिन 12:43 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

**गृह स्थिति:** सूर्य–धनु, चन्द्रमा–तुला, मंगल–धनु, बुध–धनु, गुरू–मिथुन, शुक्र–धनु, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज यमघट योग रात्रि 9:05 से सूर्योदय तक है। कुमार योग रात्रि 9:05 से आरम्भ होगा। आज भद्रा रात्रि 2:00 से आरम्भ होगी। शुक्र मकर राशि में दिन 3:58 से प्रवेश करेगा। आज स्वामी विवेकानन्द जयन्ती है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** अमृत सूर्योदय से 8:40 तक, शुभ 9:58 से 11:16 तक, चर 1:53 से 3:11 तक, लाभ–अमृत 3:11 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:48

**मेष**
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

**वृष**
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक /आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**मिथुन**
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में परिजनों से सहयोग मिल सकता है।

**कर्क**
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

**सिंह**
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में महत्त्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

**कन्या**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

**तुला**
मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृश्चिक**
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

**धनु**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

**मकर**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में आज लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**कुंभ**
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मीन**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ–मांगलिक कार्यों में व्यवधान हो सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

**श्री नरेन्द्र मोदी**
माननीय प्रधानमंत्री

2 साल
नव उत्थान - नई पहचान
**बढ़ता राजस्थान - हमारा राजस्थान**

**श्री भजनलाल शर्मा**
माननीय मुख्यमंत्री

**उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।**

12 जनवरी, 1863 - 4 जुलाई, 1902

उठो, जागो और तब तक रुको नहीं, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।

# राष्ट्रीय युवा दिवस

**12 जनवरी, 2026**

## स्वामी विवेकानंद की पावन जयंती पर सादर नमन

## दो साल में युवा उम्मीदों को मिले बेहतर अवसर

### नियुक्ति / भर्ती
1 लाख से अधिक सरकारी नियुक्तियां
**1.43 लाख** नई सरकारी भर्तियां
निजी क्षेत्र में 2 लाख से अधिक नियुक्तियां

### पारदर्शी भर्ती परीक्षा
**एसआईटी गठित**
डमी अभ्यर्थी, फर्जी डिग्री सम्बन्धी
अन्य अनियमितताओं पर रोक

### स्कूटी एवं साइकिल / टैबलेट वितरण
छात्राओं को **39,586 स्कूटियाँ** एवं
**10.51 लाख साइकिलें**
मेधावी विद्यार्थियों को **88,724 टैबलेट**

### स्टार्टअप्स को संबल
**65 i-Start लॉन्चपैड नेस्ट** स्थापित
658 स्टार्टअप्स को **₹22.48 करोड़** की सहायता

### कौशल प्रशिक्षण
3.37 लाख युवाओं को **कौशल प्रशिक्षण**
**434 रोजगार शिविरों** में 1.20 लाख युवा लाभान्वित

### मुख्यमंत्री युवा संबल योजना
4.13 लाख युवाओं को **₹1,155 करोड़**
1.91 लाख **युवाओं को इंटर्नशिप**

### खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2025
जिलों में 17 नवीन **खेलो इण्डिया**
**केन्द्रों की स्थापना**

### कृषि शोध एवं अध्ययन
58,397 **छात्राओं को ₹103 करोड़**
की प्रोत्साहन राशि

### खिलाडियों का सम्मान
1,754 खिलाडियों को
**₹39.57 करोड़** की सहायता

## राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर युवाओं को सौगात

- 1 लाख सरकारी पदों पर भर्ती का कैलेंडर
- मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना - 2026
- नवीन युवा नीति - 2026
- रोजगार नीति - 2026

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

# मांडलगढ़ में निर्दयी मां ने दो बच्चों की हत्या कर खुदकुशी का प्रयास किया

## वारदात का पता चलने पर आरोपी महिला के ससुर प्रभुलाल तेली ने थाने में दी रिपोर्ट

**मांडलगढ़**, (निसं)। मांडलगढ़ थाना क्षेत्र के मानपुरा गांव में रविवार को दिल दहला देने वाली वारदात का मामला सामने आया है। एक 35 वर्षीय निर्दयी माँ ने दो मासूम बच्चों की निर्मम हत्या कर खुद ने गले में फंदा लगा कर खुदकुशी करने की कोशिश की। इस घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया।

माण्डलगढ़ थाना प्रभारी घनश्याम मीणा ने बताया कि मानपुरा निवासी आरोपी महिला के ससुर प्रभुलाल तेली ने थाने में दी रिपोर्ट में आरोप लगाया कि उसके बेटे राजू की बहू संजू देवी तेली ने उसके 8 वर्षीय पौत्र भैरूलाल व 10 वर्षीय पुत्री नेहा की निर्मम हत्या कर दी है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जाँच शुरू कर दी। घटना की गम्भीरता को देखते हुए माण्डलगढ़ पुलिस उप अधीक्षक बाबूलाल विश्नोई और एफएसएल टीम साक्ष्य जुटाने के लिए मौक़े पर पहुंचे। इस घटना की खबर आग की तरह आसपास इलाके में फैल गई। घटना स्थल पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। जिसने भी इस वारदात के बारे में सुना वो स्तब्ध रह गया। आरोपी महिला द्वारा इस वारदात को अंजाम देने के बाद मासूम बच्चों के खून में लथपथ शव देख परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। आसपास पड़ोसियों में भी कोहराम मच गया।

आरोपी महिला ( मृतक बच्चों की मां ) को उपचार के लिए माण्डलगढ़ अस्पताल से हालत गम्भीर होने पर जिला अस्पताल रेफर किया।

- आठ वर्षीय बेटे व दस वर्षीय बेटी की हत्या कर मां ने गले में फंदा लगा खुदकुशी करने की कोशिश की
- मां पर दो मासूम बच्चों की टेंट लगाने में प्रयुक्त लोहे के सरिए और धारदार हथियार से हत्या करने का आरोप है
- बताया है कि आरोपी महिला पेट में गांठ से ग्रस्त होने से मानसिक तनाव में थी

जानकारी के अनुसार मानपुरा में रविवार को हुई हृदयविदारक घटना में एक मां पर अपने ही दो मासूम बच्चों की टेंट लगाने में प्रयुक्त लोहे के सरिए और धारदार हथियार से हत्या करने का आरोप सामने आया है।

घटना से पूरे इलाके में दहशत और शोक का माहौल है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुँची और मृतक बच्चों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सुपुर्द किया है। वहीं घटना के बाद फाँसी का फंदा लगाने से अचेत हुई आरोपी महिला (मृतक बच्चों की मां) को उपचार के लिए माण्डलगढ़ अस्पताल लाया गया, जहां उसकी हालत गम्भीर होने पर जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी महिला संजू देवी के पेट में गठान और मुंह में छाले की बीमारी होने से वह मानसिक तनाव में थी, जो इस वारदात की वजह हो सकती है, हालांकि पुलिस ने अभी किसी निष्कर्ष की पुष्टि नहीं की है।

फिलहाल आरोपी महिला का पुलिस सुरक्षा जिला अस्पताल में उपचार कराया जा रहा है। स्वस्थ होने पर आरोपी महिला के बयान लिए जाएंगे। आरोपी महिला का पीहर होडा गाँव बताया जा रहा है।

पुलिस का कहना है कि सभी पहलुओं से जांच की जा रही है और पोस्टमार्टम व फोरेंसिक रिपोर्ट के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी। पड़ोसियों के अनुसार परिवार सामान्य दिखता था, घटना के बाद क्षेत्र में आक्रोश और शोक व्याप्त है। प्रशासन ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले में कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

# चने की दाल के कट्टों के बीच अवैध डोडा-पोस्त जब्त

**टोंक**, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार मीना के निर्देशन में डीएसटी और बरौनी थाना पुलिस की संयुक्त टीम ने रविवार को अवैध मादक पदार्थ के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक ट्रक से 70 किलो डोडा-पोस्त जब्त किया है, जब्त डोडा-पोस्त की बाजार कीमत करीब 11 लाख रुपए है। यह मादक पदार्थ चने की दाल के कट्टों के बीच छुपाकर मध्य प्रदेश से पंजाब ले जाया जा रहा था, कार्रवाई के दौरान पुलिस ने ट्रक चालक सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

डीएसटी टीम प्रभारी ओमप्रकाश चौधरी ने बताया कि जिले में चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत अवैध मादक पदार्थ तस्करी के खिलाफ कार्रवाई में रविवार को मुखबिर से मिली सूचना के बाद बरौनी थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने बरौनी थाने के सामने नाकाबंदी कर वाहनों की चैंकिग करने पर एक ट्रक में भरे चने के कट्टों में आरोपियों ने प्लास्टिक की थैलियों में डोडा-पोस्त छुपाकर रखा था, जहां मौके पर ही ट्रक से कुल 70 किलो डोडा-पोस्त जब्त किया गया। इसके बाद ट्रक चालक और उसके साथ मौजूद व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में पूछताछ में सामने आया कि आरोपी जावरा, मध्य प्रदेश से ट्रक में चने की दाल के कट्टों के बीच डोडा-पोस्त छुपाकर मादक पदार्थ को होशियारपुर, पंजाब ले जाया जाना था। इस कार्यवाही में आरोपी नरेन्द्र सिंह पुत्र मोहन सिंह सैनी निवासी मुण्डिया कला, थाना जमालपुर, जिला लुधियाना पंजाब और गुरुप्रीत सिंह पुत्र दिलबिन्दर पाल रविदासीय निवासी गोलिया, थाना गढ़शंकर, जिला होशियारपुर पंजाब को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर पूछताछ की जा रही है।

- मध्य प्रदेश से पंजाब जा रहा था माल
- ट्रक चालक सहित आरोपी को गिरफ्तार किया

इसी प्रकार निवाई थानाधिकारी घासीराम के नेतृत्व गठित टीम द्वारा दौराने गश्त वनस्थली मोड के आगे राधास्वामी सतसंग आश्रम वनस्थली रोड तालाब के पास से एक संदिग्ध आरोपी दयाराम पुत्र प्रहलाद सांसी निवासी केथूनिया सासीयों की ढाणी थाना निवाई सदर को पूछताछ के बाद शक होने गिरफ्तार किया गया। आरोपी के कब्जे से 546 ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा जब्त किया जाकर एनडीपीएस एक्ट में दर्ज कर अनुसंधान जारी है।

### 1.74 लाख के नकली नोट सहित एक गिरफ्तार

**बीकानेर**, (निसं)। क्षेत्र में चलाने के लिए लाए गए 500-500 रुपए के 348 नकली नोट के खिलाफ स्थानीय पुलिस ने एक आदतन अपराधी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास एक लाख 74 हजार रुपए की कीमत के नकली नोट बरामद हुए हैं।

थानाधिकारी कश्यप सिंह ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति नकली नोटों की बड़ी खेप लेकर जा रहा है। इस पर एसआई मोहनलाल कड़वासरा की टीम ने घेराबंदी की। ऊपनी मार्ग पर एक खेत के पास संदिग्ध अवस्था में घूम रहे गंगाजल जाट को रोका। उसकी तलाशी ली तो उसके पास से 500-500 रुपए के 348 नोट मिले। जांच करने पर वे नकली निकले। इस पर आरोपी को गिरफ्तार कर नोट जब्त कर लिए। आरोपी युवक बाना गांव का निवासी है। वह आदतन अपराधी है। पूर्व में भी विभिन्न थानों में उसके खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज हैं।

प्रारंभिक पूछताछ में उसने बताया कि वह नकली नोट किसी अन्य व्यक्ति को सप्लाई करने की फिराक में था। वह बाहर के राज्य से नकली नोट लाकर यहां सप्लाई करने जा रहा था। उसे रविवार को न्यायालय में पेश कर रिमांड पर लिया जाएगा। उसके बाद उससे नकली नोट लाने और बेचने वालों के बारे में पूछताछ की जाएगी।

### शनिदेव मंदिर में तोड़फोड़

**सायला**, (निसं)। कात्यायनी माता मंदिर के पास स्थित शनिदेव मंदिर में शनिवार रात्रि को तोडफोड करने एवं आगजनी की घटना हुई। जानकारी के अनुसार रविवार प्रातः श्रद्धालु प्रतिदिन की तरह मंदिर में पूजा अर्चना के लिए गए थे। उन्होंने मंदिर में तोडफोड एवं आगजनी के निशान देखकर आसपास के लोगों को घटना बताई।

# सोपुरा के जंगलों में अवैध खनन करने वालों पर दबिश

भीलवाड़ा के सोपुरा गांव में पुलिस की विशेष टीम ने रेड मारकर अवैध बजरी खनन का पर्दाफाश किया

**भीलवाड़ा**, (निसं)। सोपुरा गांव में पुलिस की विशेष टीम ने रेड मारकर इस पूरे खेल का पर्दाफाश किया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र यादव के सख्त निर्देशों पर बीती रात जिला टीम ने एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। प्रशिक्षु आईपीएस माधव उपाध्याय और आईपीएस आयुष शोत्रिय की अगुवाई में पुलिस टीम ने बड़लियास थाना क्षेत्र के सोपुरा गांव के जंगलों में पूरी रात छिपकर ऑपरेशन चलाया।

इस दौरान बनास नदी में अवैध खनन करते हुए 7 से 8 ट्रैक्टर-ट्रॉलियों को जब्त किया गया है।

पुलिस जांच में एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। तथाकथित "बनास बचाओ आंदोलन" की आड़ में बजरी माफिया अवैध खनन का रास्ता साफ़ कर रहे थे। आरोप है कि माफियाओं का मकसद आंदोलन के नाम पर सरकारी लीजधारियों को उनकी निजी संपत्ति से डराकर भगाना था, ताकि वे बेखौफ होकर अवैध खनन कर सके।

जानकारी के अनुसार इसी गिरोह ने 28 दिसंबर 2025 को भी लीजधारियों पर जानलेवा हमला किया था। कार्रवाई के दौरान बजरी माफियाओं के हौसले इतने बुलंद थे कि उन्होंने पुलिस की टीम के साथ भी हाथापाई की और राजकार्य में बाधा पहुंचाई। पुलिस ने साफ कर दिया है कि वर्दी पर हाथ डालने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। आरोपियों के खिलाफ राजकार्य में बाधा का मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि सरकारी लीजधारियों को सुरक्षा दी जाएगी और अवैध माफियाओं को सीधा जेल का रास्ता दिखाया जाएगा।

# नोखा में घना कोहरा छाया, पारा 3 डिग्री दर्ज

**नोखा**, (निसं)। यहां शीतलहर का प्रकोप जारी है। बीते तीन दिनों में न्यूनतम तापमान में लगभग 6 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई है। रविवार को न्यूनतम तापमान 3 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया, जो इस सीजन का अब तक का सबसे कम तापमान है। मौसम विभाग ने मकर संक्रांति तक सर्दी और बढ़ने की संभावना जताई है।

कड़ाके की ठंड का असर आम जनजीवन पर साफ दिख रहा है। सुबह के समय लोग देर तक घरों में रहने को मजबूर हैं। ठंड के कारण सुबह 10 बजे तक सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहता है। रविवार सुबह भी बाजारों और सार्वजनिक स्थानों पर लोगों की आवाजाही बेहद कम रही। शहर की तुलना में ग्रामीण इलाकों में ठंड का प्रभाव अधिक है। कई गांवों में तापमान 3 डिग्री से भी नीचे चला गया है। खुले में रखे बर्तनों में पानी जमकर बर्फ बन गया, जिससे सर्दी की तीव्रता का अंदाजा लगाया जा सकता है। बीती रात शीतलहर के साथ कड़ाके की ठंड पड़ने के बाद रात 9 बजे के बाद ही सड़कों पर सन्नाटा पसरने लगा। लोग पूरे शरीर को ऊनी कपड़ों से ढककर ही घरों से बाहर निकले। रविवार को न्यूनतम तापमान 6 डिग्री गिरकर 3 डिग्री दर्ज किया गया, जबकि शनिवार को अधिकतम तापमान 22 डिग्री रहा। दिन और रात के तापमान में करीब 19 डिग्री का अंतर दर्ज किया गया। ठंड का असर वाहनों पर भी नजर आया। नोखा के तिरुपति नगर में गर्वित माली की कार पर सुबह बर्फ जमी हुई दिखाई दी।

# पुलिस पर फायरिंग करने के मामले में पांच आरोपी पकड़े

**कोटा**, (निसं)। कोटा ग्रामीण की मोड़क व सांगोद पुलिस टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए पूर्व में पुलिस टीम पर फायरिंग करने के मामले में फरारी काट रहे हार्डकोर अपराधी आदिल मिर्जा सहित चार अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस कार्रवाई के दौरान मुठभेड़ में हार्डकोर अपराधी आदिल मिर्जा के पैर में गोली लगने से घायल हो गया।

पुलिस से मुठभेड़ में हार्डकोर अपराधी आदिल मिर्जा के पैर में गोली लगने से घायल हो गया।

- पुलिस से मुठभेड़ में हार्डकोर अपराधी आदिल मिर्जा पैर में गोली लगने से घायल हुआ
- हार्डकोर अपराधी दो दिन पूर्व भी पुलिस पर कर फायरिंग चुका था, हथियार भी जब्त किये

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि मोड़क पुलिस को सूचना मिली कि गत दिनों सांगोद थाना क्षेत्र में पुलिस टीम पर फायरिंग करने के प्रकरण में एवं कोटा शहरी क्षेत्र में फायरिंग के प्रकरण में फरार हार्डकोर अपराधी आदिल मिर्जा चौसला ब्रीज के पास अमरूद के बाग में छिपा हुआ है। सूचना पर वृत रामगंजमण्डी व थाना सांगोद की टीम एवं कार्यालय पुलिस अधीक्षक जिला कोटा ग्रामीण की स्पेशल टीमों द्वारा उक्त स्थान पर दबिश दी गई, जहां हार्डकोर अपराधी आदिल मिर्जा अपने साथियों के साथ छिपा हुआ दिखा। पुलिस टीम ने हार्डकोर अपराधी सहित अन्य आरोपियों को चारों तरफ घेर लिया और आरोपियों को आत्मसमर्पण करने को कहा। ग्रामीण एसपी ने बताया कि अपराधी ने आत्मसमर्पण की जगह पुलिस टीम पर फायरिंग शुरू कर दी, जबावी में पुलिस टीम ने फायरिंग की जिसमें हार्डकोर अपराधी आदिल के पैर में गोली लगने से वह घायल हो गया एवं अन्य अपराधी के साथी भी भागने का प्रयास करने लगे जिससे उनके भी चोंटे आईं, जिनको पुलिस द्वारा इलाज हेतु अस्पताल में भर्ती करवाया गया।

ग्रामीण एसपी ने बताया कि पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए हार्डकोर अपराधी खेलदार मोहल्ला सांगोद निवासी आदिल मिर्जा सहित मोडक निवासी फेजल उर्फ टीपू, छापड़ा मोडक निवासी फय्यूम एवं मोड़क निवासी अल्फेज खान को गिरफ्तार किया, पुलिस टीम ने पकड़े गये आरोपियों के पास से एक 12 बोर देशी कट्टा दो नाली, दो देशी कट्टा, एक पिस्टल व 3 मेगजीन मय 16 जिंदा कारतूस एवं एक चाकू, सहित चार मोबाईल एक डोगल व वाहन जब्त किये है।

ग्रामीण एसपी ने बताया कि दो दिन पूर्व शुक्रवार को सांगोद इलाके में हार्डकोर अपराधी आदिल मिर्जा को गिरफ्तार करने गई पुलिस टीम पर भी अपराधी ने फायरिंग की थी और अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गया था, अपराधी शहरी क्षेत्र के कैथूनीपोल थाना इलाके में हुई एक फायरिंग की घटना के बाद से फरार चल रहा था। कोटा ग्रामीण इलाके के सांगोद क्षेत्र से फरार होने के बाद अपराधी की तलाश के लिये ग्रामीण अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकल्याण मीना के निर्देशन में तलाशी अभियान चलाया जा रहा था। पकड़े गये अपराधी आदिल मिर्जा पर लूट, डकैती सहित कई संगीन धाराओं में मामले दर्ज हं

# गुजरात के अंतर्राष्ट्रीय "काइट फेस्टिवल" की झलक कोटा में देखने को मिली

**कोटा,** (निसं)। ड्रैगन शेप पतंगें, विशालकाय पतंगें, लाईव बैंड, गरबा, ढोल-नगाड़े, हर घंटे लकी ड्रॉ व आकर्षक पुरस्कार। कुछ इसी तरह का नजारा रहा अग्र-आरोही अग्रवाल महिला मंच एवं श्री उम्मेद क्लब के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "काइट फेस्टिवल" का। गुजरात के अंतरराष्ट्रीय काइट फेस्टिवल की झलक कोटा में भी देखने को मिली। सूरत और अहमदाबाद की तर्ज पर पहली बार कोटा शहर में भव्य "काइट फेस्टिवल" का आयोजन हुआ, जिसने न सिर्फ शहरवासियों को आकर्षित किया बल्कि पर्यटन की दृष्टि से कोटा को नई पहचान भी दी। इस आयोजन ने मौज-मस्ती, संस्कृति और पर्यटन तीनों का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया। उम्मेद क्लब स्टेडियम में दिनभर रंगीन, विशालकाय और आकर्षक पतंगों ने आसमान को उत्सवमय बना दिया।

अग्र-आरोही अग्रवाल महिला मंच की अध्यक्ष पूजा मित्तल ने बताया कि इस अवसर पर अतिथि के रूप में ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर, रामगंजमंडी उपखण्ड अधिकारी चारू, एडीएम सिटी अनिल कुमार सिंघल रहे। जिस प्रकार गुजरात का काइट फेस्टिवल देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं, उसी सोच और भावना के साथ कोटा में इस आयोजन को साकार किया गया। उद्देश्य था कि कोटा भी ऐसे आयोजनों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन मानचित्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराए। संरक्षिका शिखा गुप्ता ने कहा कि यह आयोजन केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि भारतीय संस्कृति, पारंपरिक खेलों और सामूहिक उत्सव की भावना को पुनर्जीवित करने का प्रयास रहा। डिजिटल युग में बच्चों और युवाओं को मोबाइल से बाहर निकालकर खुले आसमान के नीचे खुशियों से जोड़ना इस फेस्टिवल का प्रमुख लक्ष्य रहा।

अग्र-आरोही अग्रवाल महिला मंच एवं श्री उम्मेद क्लब के संयुक्त तत्वावधान में काइट फेस्टिवल हुआ।

- गुजरात की तर्ज पर कोटा में पहली बार "काइट फेस्टिवल", पर्यटन नक्शे पर उभरा शहर
- "काइट फेस्टिवल" में सूरत-अहमदाबाद जैसा नजारा, रंगीन पतंगों से सजा कोटा का आसमान

उड़ान काइट कार्निवल की प्रोजेक्ट कॉ-ऑर्डिनेटर शालू अग्रवाल एवं सचिव निक्की अग्रवाल ने जानकारी दी कि सुबह से शाम तक उम्मेद क्लब स्टेडियम में पतंगों का अद्भुत दृश्य देखने को मिला। जैसे ही ड्रैगन शेप, श्री-डी डिजाईन, लाईटिंग वाली और विशालकाय गुजराती पतंगें हवा में लहराईं, पूरा वातावरण गुजरात के इंटरनेशनल काइट फेस्टिवल जैसा नजर आने लगा। अग्र-आरोही अग्रवाल महिला मंच की अध्यक्ष पूजा मित्तल एवं कोषाध्यक्ष सारिका मित्तल ने बताया कि बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों-हर वर्ग के लिए यह आयोजन किसी मेले से कम नहीं रहा।

उम्मेद क्लब के सचिव लोकेन्द्र सिंह राजावत एवं कार्यक्रम कॉर्डिनेटर अभिषेक मित्तल ने कहा कि इस आयोजन से कोटा की सांस्कृतिक पहचान को नया आयाम मिला है और भविष्य में आयोजन पर्यटन को बढ़ावा देने में मील का पत्थर साबित होंगे।

# डूंगरपुर में गीली लकड़ी से भरे तीन ट्रक जब्त

**डूंगरपुर**, (निसं)। डूंगरपुर की बिछीवाड़ा थाना पुलिस ने राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर गीली लकड़ी से भरे तीन ट्रक जब्त किए हैं। इन ट्रकों में हरे पेड़ों को काटकर भरी गई गीली लकड़ी मिली, जिसे गुजरात ले जाया जा रहा था। पुलिस ने तीनों ट्रक चालकों को हिरासत में ले लिया है।

बिछीवाड़ा थानाधिकारी कैलाश सोनी ने बताया कि ऑपरेशन पृथ्वी के तहत हरे पेड़ों की कटाई, तस्करी और अवैध खनन के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत पुलिस को सूचना मिली थी कि नेशनल हाईवे के रास्ते अवैध गीली लकड़ी की तस्करी की जा रही है। सूचना के आधार पर पुलिस टीमों ने बिछीवाड़ा में हाईवे पर नाकेबंदी की। इस दौरान तीन संदिग्ध ट्रक आते हुए दिखाई दिए। पुलिस ने ट्रकों को रुकवाकर चालकों से पूछताछ की, लेकिन वे कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए।इसके बाद पुलिस ने तीनों ट्रकों से तिरपाल हटाकर जांच की। ट्रकों में विभिन्न किस्मों के हरे पेड़ों की गीली लकड़ी भरी हुई थी। चालकों के पास लकड़ी के परिवहन से संबंधित कोई वैध दस्तावेज भी नहीं मिले।

पुलिस ने इस कार्रवाई की सूचना वन विभाग को दे दी है। वन विभाग अब यह जांच करेगा कि हरे पेड़ों की कटाई किन स्थानों से की गई थी और इस तस्करी में कौन-कौन शामिल हैं। विभाग की ओर से इस मामले में जुर्माना लगाने के साथ-साथ कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।


**कार्यालय उप वन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक (द्वितीय) रणथम्भौर टाईगर रिजर्व करौली**

इस कार्यालय द्वारा जारी ई-निविदा सूचना संख्या 19/2025-26 दिनांक 05.01.2026, खुली-निविदा सूचना संख्या 26/2025-26 दिनांक 06.01.2026, खुली निविदा सूचना संख्या 27/2025-26 दिनांक 06.01.2026, सीमित निविदा सूचना संख्या 17/2025-26 दिनांक 06.01.2026 एवं सीमित निविदा सूचना संख्या 18/2025-26 दिनांक 06. 01.2026 द्वारा निविदा आमंत्रित की गई है। अतः इच्छुक बोलीदाता पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in पर देख कर ऑनलाईन निविदाओं को डाउनलोड कर निविदाओं में भाग ले सकते है।

| क्र. सं. | कार्य का विवरण | UBN No. | अनुमानित लागत (लाखों में) | जारी दिनांक | जमा कराने की दिनांक | खोलने की दिनांक |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Camera Trap As Per H-Scheule | UBN No FOR2526 GLRC04457 | 60.00 | 05.01.2026 | 14.01.2026 | 15.01.2026 |
| 2. | रेस्क्यू सेन्टर मरम्मत एवं अपग्रेडेशन कार्य | UBN No FOR2526 WSOB04490 | 2.00 | 06.01.2026 | 12.01.2026 | 12.01.2026 |
| 3. | नैचर कैम्प मरम्मत एवं अपग्रेडेशन कार्य | UBN No FOR2526 WSOB04491 | 4.95 | 06.01.2026 | 12.01.2026 | 12.01.2026 |
| 4. | Supply & Installation of Laptop and Tablet | UBN No FOR2526 GSOB04498 | 2.00 | 06.01.2026 | 12.01.2026 | 12.01.2026 |
| 5. | Supply & Installation of Solar System | UBN No FOR2526 GSLB04509 | 1.53 | 06.01.2026 | 12.01.2026 | 12.01.2026 |

(पीयूष कुमार शर्मा) उप वन संरक्षक
एवं उप क्षेत्र निदेशक (द्वितीय), रणथम्भौर टाईगर रिजर्व, करौली

# सेना दिवस परेड रिहर्सल में टैंक, मिसाइल और अपाचे की दहाड़

## रिहर्सल में सेना के जवानों के बाइक करतब विशेष आकर्षण का केंद्र रहे, बाइकों पर जवानों ने ह्यूमन पिरामिड बनाकर दर्शकों को रोमांचित किया

**जयपुर।** जयपुर के जगतपुरा स्थित महल रोड रविवार को करीब पांच घंटे तक सेना की छावनी में तब्दील रहा। 15 जनवरी को होने वाली 78वीं सेना दिवस परेड से पहले फुल ड्रेस रिहर्सल का। सुबह से ही पूरे इलाके में सैन्य अनुशासन, कदमताल की गूंज और देशभक्ति का वातावरण नजर आया। जहां नजर गई, वहीं खाकी वर्दी में सधे कदमों से मार्च करते जवान और अत्याधुनिक हथियार भारतीय सेना की ताकत का प्रदर्शन करते दिखे।

- **खाकी वर्दी में सधे कदमों से मार्च करते जवान व आधुनिक हथियार भारतीय सेना की ताकत का प्रदर्शन करते दिखे**

रिहर्सल परेड में सेना की झांकियों ने आत्मनिर्भर भारत की झलक पेश की।

रविवार को सेना दिवस परेड की दूसरी फुल ड्रेस रिहर्सल हुई। इससे पहले 9 जनवरी को पहली रिहर्सल आयोजित की गई थी। सुबह करीब साढ़े आठ बजे शुरू हुई यह रिहर्सल दोपहर करीब डेढ़ बजे तक चली। इस दौरान थल, वायु और तकनीकी शक्ति का भव्य प्रदर्शन किया गया। टैंक, मिसाइल सिस्टम, मल्टीपल रॉकेट लॉन्चर, ड्रोन और लड़ाकू हेलिकॉप्टरों ने सेना की आधुनिक युद्ध क्षमता को सजीव रूप में प्रस्तुत किया।

रिहर्सल में सेना के जवानों के बाइक करतब विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। सात बाइकों पर 27 जवानों ने ह्यूमन पिरामिड बनाकर दर्शकों को रोमांचित कर दिया। चलती बाइकों पर सुदर्शन चक्र और अशोक स्तंभ की आकृतियां बनाकर सेना ने यह संदेश दिया कि वह हर परिस्थिति में राष्ट्र की रक्षा के लिए सदैव तत्पर है। टोरनेडोज टीम ने चलती बाइक को जिम में बदलते हुए प्लैंक पोजिशन में शारीरिक व्यायाम कर अनुशासन और फिटनेस का संदेश दिया।

भारतीय सेना के अत्याधुनिक अपाचे एएच-64ई, चीता और चेतक हेलिकॉप्टरों ने फ्लाई-पास्ट कर आसमान में शक्ति प्रदर्शन किया। अपाचे हेलिकॉप्टर, जिसे 'फ्लाइंग टैंक' भी कहा जाता है, रिहर्सल का प्रमुख आकर्षण रहा। वहीं धरती पर के-9 वज्र टी टैंक ने अपनी ताकत दिखाई, जो 45 किलोमीटर दूर तक दुश्मन के ठिकानों को नेस्तनाबूद करने में सक्षम है। स्वदेशी अर्जुन मार्क-1 टैंक ने भी अपनी मारक क्षमता और तकनीकी खूबियों से दर्शकों को प्रभावित किया।

रिहर्सल में अग्निबाण मल्टीपल रॉकेट लॉन्चर सिस्टम का प्रदर्शन किया गया, जो मात्र 20 सेकेंड में 40 से अधिक रॉकेट दागने की क्षमता रखता है। डीआरडीओ द्वारा विकसित 'सूर्यास्त' यूनिवर्सल रॉकेट लॉन्चर सिस्टम की झलक भी दिखाई गई, जिसकी मारक क्षमता 300 किलोमीटर तक है और जिससे एक साथ छह मिसाइलें दागी जा सकती हैं। इसके अलावा हेलिकॉप्टर लॉन्च्ड नाग मिसाइल 'हेलिना' ने भी सैन्य शक्ति का परिचय दिया। हाई मोबिलिटी रिकॉनिसेंस व्हीकल (एचएमआरवी) जैसे बख्तरबंद वाहनों का प्रदर्शन किया गया, जो मैदानी इलाकों से लेकर रेगिस्तान और बर्फाले पहाड़ों तक ऑपरेशन करने में सक्षम हैं। ये वाहन करीब पांच हजार मीटर की ऊंचाई तक कार्य कर सकते हैं और आधुनिक संचार प्रणाली व हथियारों से लैस हैं।

रिहर्सल परेड में सेना की झांकियों ने आत्मनिर्भर भारत की झलक पेश की। स्वदेशी तकनीक से लैस मिसाइल सिस्टम, रोबोटिक योद्धा और अत्याधुनिक निगरानी उपकरणों ने दर्शकों का ध्यान खींचा। 210 रॉकेट रेजिमेंट, क्विक रिएक्शन फाइटर व्हीकल, लाइट स्ट्राइक व्हीकल, एंटी टैंक मोबाइल टीम और व्हीकल माउंटेड इन्फेंट्री मोर्टार सिस्टम का भी प्रदर्शन किया गया।

सेना की प्रतिष्ठित घुड़सवार बटालियन ने परंपरा और शौर्य को जीवंत किया। वहीं हाल ही में गठित भैरव बटालियन ने भी फ्लाई-पास्ट कर अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। 'अदृश्य और अदम्य' टैगलाइन वाली यह बटालियन चीन और पाकिस्तान से लगी सीमाओं सहित किसी भी चुनौतीपूर्ण ऑपरेशन के लिए पूरी तरह सक्षम है।

# प्राइवेट कंपनी के हेलिकॉप्टर की जयपुर में इमरजेंसी लैंडिंग

**जयपुर।** जयपुर में एक हेलिकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग करवानी पड़ी। हेलिकॉप्टर जयपुर से भोपाल (मध्य प्रदेश) जा रहा था। प्राइवेट कंपनी के हेलिकॉप्टर में सवार पायलट और को-पायलट पूरी तरह सुरक्षित हैं और किसी प्रकार की क्षित नहीं हुई। घटना रविवार सुबह करीब 11 बजे की जयपुर ग्रामीण के रायसर के पास स्थित वामनवाटी गांव की है।

- **तकनीकी खराबी आने पर पायलट ने सुरक्षित उतारा, भोपाल के लिए भरी थी उड़ान**

एवन हेलिकॉप्टर कंपनी के डायरेक्टर सोहन सिंह नाथावत ने बताया- हेलिकॉप्टर देहरादून (उत्तराखंड) से शनिवार शाम 4:30 बजे जयपुर पहुंचा था। इसके बाद हेलिकॉप्टर में फ्यूल रिफ्यूलिंग की प्रक्रिया पूरी की गई। रविवार को मौसम साफ होने के बाद हेलिकॉप्टर ने सुबह 11:02 बजे जयपुर में चौमूं के मलिकपुर स्थित हेलीपैड से भोपाल के लिए उड़ान भरी थी। उड़ान भरने के कुछ देर बाद ही हेलिकॉप्टर में तकनीकी खराबी आ गई।

रायसर के नजदीक वामनवाटी गांव में पायलट ने सूझबूझ दिखाते हुए हेलिकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग करवाई। फिलहाल हमारी टीम हेलिकॉप्टर की तकनीकी खराबी की जांच में जुटी हुई है।

# दुबई से जयपुर आई फ्लाइट में पैसेंजर ने किया हंगामा

**जयपुर।** दुबई से जयपुर आने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट में उस समय हंगामे की स्थिति बन गई, जब एक पैसेंजर ने उड़ान के दौरान विमान के क्रू मेंबर के साथ दुर्व्यवहार किया। क्रू मेंबर की शिकायत के बाद जयपुर एयरपोर्ट पर लैंडिंग होते ही यात्री को सिक्योरिटी स्टाफ ने उतारकर पुलिस के हवाले कर दिया। दरअसल दुबई से उड़ान भरकर रविवार शाम 4:40 बजे जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर फ्लाइट पहुंची थी। इस फ्लाइट में क्रू मेंबर के साथ एक पैसेंजर ने दुर्व्यवहार किया है। जयपुर एयरपोर्ट से जुड़े सूत्रों के अनुसार- उड़ान के दौरान एक यात्री का व्यवहार लगातार आपत्तिजनक रहा। यात्री ने विमान के क्रू मेंबर के साथ अभद्र भाषा का प्रयोग किया और उनके निर्देशों का पालन करने से इनकार किया। एयरपोर्ट थाना पुलिस ने यात्री को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

# पूगल बनेगा सौर ऊर्जा का नया हब, 2450 मेगावाट क्षमता का होगा सोलर पार्क

**जयपुर।** मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश में सौर ऊर्जा परियोजनाओं को निरन्तर गति दे रही है। इसी क्रम में बीकानेर जिले के पूगल में स्थापित किए जा रहे सोलर पार्क की निविदा को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर लॉन्च कर दिया गया है। इसमें बोली प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 9 मार्च निर्धारित की गई है। इस निविदा में सौर ऊर्जा क्षेत्र की देश-विदेश की कंपनियां अपनी बोली प्रस्तुत करेंगी।

- **17 हजार करोड़ रुपए का आएगा निवेश**
- **पार्क के विकास के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जारी निविदा**

ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने बताया कि पूगल सोलर पार्क में 2,450 मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजनाओं के साथ 1,600 मेगावाट/6,400 मेगावाट-घंटे बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली की स्थापना भी की जाएगी। यह पार्क राज्य में सुनिश्चित और डिस्पैचेबल नवीकरणीय ऊर्जा उपलब्ध कराने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा।

ऊर्जा मंत्री ने बताया कि राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड की सहायक कंपनी राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी इस परियोजना के लिए आधारभूत ढांचा विकसित कर रही है। इसके लिए 4,394 हेक्टेयर भूमि का आवंटन किया जा चुका है। इसमें जो सोलर तथा बैटरी एनर्जी स्टोरेज परियोजनाएं स्थापित होंगी, वे राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम के पारेषण तंत्र से कनेक्ट की जाएंगी। परियोजनाओं को बिल्ड ऑन ऑपरेट (बीओओ) मॉडल के तहत विकसित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इन परियोजनाओं से उत्पन्न शत-प्रतिशत बिजली का क्रय 25 वर्षों के लिए राजस्थान ऊर्जा विकास एवं आईटी सर्विसेज लिमिटेड द्वारा राज्य के डिस्कॉम्स के लिए किया जाएगा। इससे डवलपर्स को दीर्घकालिक राजस्व मिलना सुनिश्चित होगा।

पार्क को दो भागों में विकसित किया जाएगा। प्रथम भाग में 2,000 मेगावाट सौर ऊर्जा के साथ ही 1,320 मेगावाट/5,280 मेगावाट-घंटे बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम का विकास होगा। दूसरे भाग में 450 मेगावाट सौर ऊर्जा तथा 280 मेगावाट/1,120 मेगावाट-घंटे ऊर्जा भंडारण प्रणाली विकसित होगी। बोलीदाता दोनों लॉट में भाग ले सकते हैं। इसमें अपूर्व्ड लिस्ट ऑफ मॉडयूल मैन्यूफैक्चरर्स सूचीबद्ध सौर मॉड्यूल का उपयोग, साइबर सुरक्षा मानकों का पालन तथा जीपीएस-सक्षम स्वचालित मौसम स्टेशन की स्थापना अनिवार्य होगी। हस्ताक्षर की तिथि से 24 माह के भीतर ऊर्जा उत्पादन शुरू करना होगा।ऊर्जा मंत्री ने बताया कि इन परियोजनाओं से लगभग 17,000 करोड़ रुपये का निवेश आएगा।

# नाथाजी के कार्य समाज के जीवन के लिए आदर्श सूत्र

**जयपुर।** वीर शिरोमणि नाथाजी स्मृति , समारोह खंडेलवाल वैश्य महाविद्यालय के सभागार में बड़ पीपली बालाजीधाम के महंत परमेंद्रनाथ जी एंव वृंदावन सनातन पीठ के पीठाधीश्वर कौशल किशोर ठाकुर जी के पावन सानिध्य एंव एडमिरल माधवेंद्र सिंह नाथावत पूर्व नौसेना अध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

- **कार्यक्रम संयोजक मोती सिंह सांवली ने बताया कि कार्यक्रम में 201 विभिन्न क्षेत्र की प्रतिभाओं का सम्मान किया**
- **कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्रामीण सांसद राव राजेन्द्र सिंह शाहपुरा थे**

कार्यक्रम में 201 विभिन्न क्षेत्र की प्रतिभाओं का सम्मान किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेन्द्र सिंह शाहपुरा थे। कार्यक्रम संयोजक मोती सिंह सांवली ने बताया कि कार्यक्रम में 201 विभिन्न क्षेत्र की प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। यह कार्यक्रम नाथावत वंश प्रवर्तक वीर शिरोमणि नाथाजी की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है।

कार्यक्रम में अति विशिष्ट अतिथि क्षित्रय युवक संघ के संघ प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेनियोकाबास, श्रवण सिंह बगड़ी, महामंत्री भाजपा, राजस्थान, समाजसेवी रणजीत जाखली (समाजसेवी), राखी राठौड़ प्रदेशाध्यक्ष भाजपा महिला मोर्चा , महेंद्र सिंह तँवर राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षित्रय महासभा, चंद्रवीर सिंह नमाणा ,राष्ट्रीयअध्यक्ष महाराणा प्रताप स्मारक, पूर्व विधायक प्रदीप सिंह सिगोली, सहित हजारों लोगों ने उपस्थित हो कर नाथाजी को पुष्पांजलि अर्पित की।

# कार सवार बदमाशों ने युवक से हजारों की नकदी सहित अन्य सामान लूट हुए फरार

**जयपुर।** पत्रकार कॉलोनी थाना इलाके में शुक्रवार देर रात कार सवार बदमाशों ने एक स्कॉर्पियों गाड़ी के आगे अपनी कार लगाकर उसे रोका और मारपीट करते हुए पीड़ित से हजारों रुपयों की नकदी व अन्य सामान ले कर फरार हो गए। आरोपियों के चुगंल से मुक्त होने के बाद पीड़ित जैसे-तैसे थाने पहुंचे और मामले की जानकारी पुलिस को दी। जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने आसपास नाकाबंदी कर बदमाशों की तलाश की। लेकिन पुलिस के हाथ कोई सफलता नहीं लगी। पुलिस ने अज्ञात कार सवार बदमाशों के लिए लूट का मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरु कर दी है।

- **पुलिस ने आसपास नाकाबंदी कर बदमाशों की तलाश की।पुलिस ने अज्ञात कार सवार बदमाशों के लिए लूट का मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरु कर दी है।**

एसआई अशोक कुमार ने बताया की पीड़ित बाबूलाल चौधरी (31) रेनवाल,मांझी निवासी शुक्रवार रात को अपनी स्कॉर्पियों कार से मदाऊ कट के पास से होता हुआ घर जा रहा था। इसी दौरान मदाऊ कट के पास एक तेज रफ्तार बिना नंबरों की स्वीफ्ट कार आई और ओवर टेक कर उसकी गाड़ी के आगे आकर रुकी गई। जिसमें से 4-5 लोग नीचे उतरे और जबरन पैसे मांगने लगे। मना करने पर आरोपियों ने बेस बॉल के डंडे और सरिए से मारपीट करना शुरु कर दिया। अज्ञात बदमाशों ने मारपीट कर जेब में रखे 19 हजार 5 सौ रुपए और गाड़ी में रखे 15 हजार के कपड़े लूटकर फरार हो गए। मामले की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने बदमाशों की आसपास तलाश भी की। लेकिन अज्ञात कार सवार बदमाशों का कोई सुराग नहीं लगा। पुलिस ने घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर कार सवार बदमाशों की तलाश शुरु कर दी है।

# सड़कों पर फैली मिट्टी से आमजन को भारी परेशानी

**जयपुर।** धावास रोड और आसपास की दर्जनों कॉलोनियों में सडक-लाइट नहीं होने और सडकों पर फैली मिट्टी से आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड रहा है। इसे लेकर पृथ्वी राज नगर जन विकास समिति के पदाधिकारियों ने नगर निगम आयुक्त गौरव सैनी से मुलाकात की।समिति अध्यक्ष अनिल माथुर ने बताया कि जगदम्बा नगर, रजनी विहार, मोहित कॉटेज, हनुमान वाटिका, गोपाल नगर, विकास नगर, जगदम्बा विहार, श्याम विहार,हीरा नगर,सीता नगर,गणेश नगर सहित कई कॉलोनियों का नियमन हो चुका है। इसके बाद भी अधिकांश सडकों पर स्ट्रीट लाइट नहीं है। रात को आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। धावास रोड पर भारी बारिश के बाद सडक पर जमा मिट्टी और धूल भी बडी समस्या बनी हुई है। दिनभर वाहनों की आवाजाही से धूल उडती रहती है।

- **अधिकांश सड़कों पर स्ट्रीट लाइट नहीं होने से आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है**

## सार-समाचार

### जयपुर फुट के शिविर का आयोजन

**जयपुर।** मध्य अमेरिकी देश गुआटेमाला की राजधानी गुआटेमाला सिटी के विश्व प्रसिद्ध जयपुर फुट का शिविर भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के सहयोग से शुरू हुआ। पचास दिवसीय इस शिविर में 650 विकलांगों का पुर्नवास किया जाएगा। गुआटेमाला की राजधानी में शिविर का उद्घाटन रक्षा मंत्री मेजर जनरल हैलरी साएन्ज ने गुआटेमाला में भारतीय राजदूत आर. के. सिंह तथा गुआटेमाला की द्विव्यांग कल्याण की संस्था नैशनल काउन्सिल फॉर दी केयर ऑफ पीपल विद डिसेबिलिटी (कान रैड) की अध्यक्ष मायरा वर्जीनिया लिंगास तथा इसी संस्था की कार्यकारी निदेशक क्लागीन ओलाडेस और उच्च सैनिक अधिकारियों की उपस्थिति में एक सैनिक संस्थान मिलिट्री ब्रिगेड मार्शल जिवाला में किया। उल्लेखनीय है कि इस शिविर का आयोजन विदेश मंत्रालय द्वारा इण्डिया फॉर ह्यूमैनिटीज कार्यक्रम के अन्तर्गत किया जा रहा है और जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) के तकनिकी सहयोग से इस शिविर का आयोजन हो रहा है। उद्घाटन समारोह में बी.एम.वी.एस.एस. के अध्यक्ष सतीश मेहता उपस्थित थे ।

### पुनर्मिलन कार्यक्रम का आयोजन

**जयपुर।** वर्ष 1980 में एडमिशन ले ने वाले मालवीय रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज के सभी इंजीनियरस ने पुनर्मिलन कार्यक्रम का संयोजन किया। जिसके क्रम में आज जयपुर स्थित आर चंद्रआ पैलेस में लगभग 60 से अधिक बैचमेट्स सपत्नीक इस रूबी मिलन समारोह में एकत्रित हुए है। दिन के इस कार्यक्रम के पश्चात यह सभी बैचमेट्स अपने शिक्षण संस्थान वर्तमान में मालवीय नेशनल इंस्टिट्यूट टेक्नोलॉजी परिसर में उन्हीं हॉस्टल्स की मैस में आज वैसा ही खाना भी खाएंगे।यह कार्यक्रम पुराने साथियों से न केवल मिलने का अवसर प्रदान करता है अपितु उन स्मृतियों को भी साझा करने का एक मंच है जिसके माध्यम से समाज को उनके द्वारा दिए गए योगदान से यह एक दूसरे को अवगत करा सकेंगे।उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में संयुक्त राज्य अमेरिका, दुबई, सिंगापुर और भारत के दूर दराज राज्यों से बैचमेट अपनी पत्नी सहित इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो रहे हैं। वर्ष 1985 बैच के ही सतीश कुमार वर्तमान में चेयरमैन रेलवे बोर्ड हैइसके अतिरिक्त अनिल खंडेलवाल मेंबर रेलवे बोर्ड नेशनल टेक्निकल यूनिवर्सिटी सिंगापुर की सीनियर प्रोफेसर दीप्ति श्रीनिवासन एवं बहुत से विभागों के मुख्य अभियंता एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने अपने सेवा काल में समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाहन किया ।

### पशुपालकों और डेयरी संघों के पदाधिकारियों के साथ बजट पूर्व संवाद

**जयपुर।** मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि किसान और पशुपालक राज्य की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ है। राज्य सरकार इनको उन्नत, समृद्ध और खुशहाल बनाने के लिए निरंतर फैसले ले रही है। शर्मा ने कहा कि कृषि, पशुपालन और डेयरी क्षेत्र एक दूसरे के पूरक हैं। आपसी सामंजस्य के साथ कार्य करते हुए ये तीनों क्षेत्र आपणो अग्रणी राजस्थान के संकल्प को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

# साइबर अपराधों पर लगाम के लिए फर्स्ट रिस्पॉन्स सबसे अहम : डी.जी.पी. शर्मा

**जयपुर।** साइबर अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए फर्स्ट रिस्पॉन्स की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। यह बात पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने पुलिस मुख्यालय में आयोजित 1930 साइबर क्राइम हेल्पलाइन ऑपरेटर्स की दो दिवसीय फर्स्ट रिस्पॉन्डर्स वर्कशॉप के समापन पर कही। कार्यशाला का आयोजन राजस्थान पुलिस और साइबरपीस के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

- **कार्यशाला का आयोजन राजस्थान पुलिस और साइबरपीस के संयुक्त तत्वावधान में किया**

पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने पुलिस मुख्यालय में आयोजित 1930 साइबर क्राइम हेल्पलाइन ऑपरेटर्स की दो दिवसीय फर्स्ट रिस्पॉन्डर्स वर्कशॉप के समापन पर कार्यशाला को संबोधित किया।

डीजीपी शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशा के अनुरूप राजस्थान में जल्द ही भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र की तर्ज परराजस्थान साइबर क्राइम को-ऑर्डिनेशन सेंटरस्थापित किया जाएगा, जिसे साइबर अपराध नियंत्रण के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि साइबर अपराध की शिकायतों पर त्वरित और संवेदनशील प्रतिक्रिया से ही पीड़ितों की राशि समय रहते फ्रीज करवाई जा सकती है। ऑपरेटर्स को तकनीकी रूप से अपडेट रहकर फर्स्ट रिस्पॉन्डर की भूमिका निभानी होगी।

कार्यशाला में गोल्डन ऑवर, साइबर वित्तीय धोखाधड़ी, फिशिंग, इन्वेस्टमेंट स्कैम सहित बदलते अपराध पैटर्न पर प्रशिक्षण दिया गया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को डीजीपी राजीव शर्मा और एडीजी साइबर क्राइम विजय कुमार सिंह ने सम्मानित किया। कार्यशाला के उद्देश्य पर डीआईजी व एसपी साइबर क्राइम शांतनु सिंह ने प्रकाश डाला।

# ज्वेलरी शॉप चोरी गैंग की मास्टरमाइंड गिरफ्तार

**जयपुर।** एयरपोर्ट थाना पुलिस ने ज्वेलरी शॉप में चोरी करने वाली महिला चोर गैंग की मास्टरमाइंड को गिरफ्तार कर बड़ी सफलता हासिल की है। आरोपी महिला से पूछताछ में सामने आया है कि वह अपने महंगे शौक और मौज-मस्ती के लिए महिला चोर गिरोह का संचालन कर रही थी। पुलिस अब गिरोह में शामिल अन्य महिलाओं की तलाश में जुटी है।

- **जगतपुरा बाजार स्थित श्याम ज्वैलर्स पर तीन महिलाएं खरीदारी के बहाने पहुंचीं और दुकानदार को बातों में उलझाकर चांदी की पायल की एक ट्रे चोरी कर फरार हो गई**

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पूर्व) संजीव नैन ने बताया कि तीन जनवरी को जगतपुरा बाजार स्थित श्याम ज्वैलर्स पर तीन महिलाएं खरीदारी के बहाने पहुंचीं और दुकानदार को बातों में उलझाकर चांदी की पायल की एक ट्रे चोरी कर फरार हो गईं। बाद में सामान मिलान के दौरान चोरी का पता चला, जिस पर पीड़ित के पुत्र ने एयरपोर्ट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई।

पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच करते हुए महिला चोर गिरोह की मास्टरमाइंड नीरु उर्फ सोन्या (38) निवासी कोटा को गिरफ्तार किया। आरोपी को कोटा में दबिश देकर पकड़ा गया। उसके कब्जे से चोरी की गई चांदी की छह पायल बरामद की गई हैं।

पूछताछ में आरोपित नीरु ने अपनी रिश्तेदार महिलाओं मौसम और गुड्डी के साथ मिलकर चोरी की वारदातों को अंजाम देना स्वीकार किया है। आरोपी महिला ने बताया कि गिरोह कई राज्यों में ज्वेलरी शॉप पर दुकानदारों को बातों में उलझाकर सोने-चांदी के आभूषण चोरी कर चुका है। चोरी के माल को बेचकर वह अपने परिवार का खर्च चलाने के साथ मौज-मस्ती में पैसे उड़ाती थी। पुलिस के अनुसार यह गिरोह एयरपोर्ट इलाके के अलावा प्रतापनगर और झोटवाड़ा क्षेत्र में भी ज्वेलरी शॉप चोरी की वारदातों को अंजाम दे चुका है। पुलिस गिरोह से जुड़े अन्य सदस्यों की तलाश कर रही है।

# चिकित्सा मंत्री ने बजट घोषणा के तहत सड़क निर्माण कार्यों की प्रगति जानी

**बीकानेर,** (कासं)। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री तथा जिला प्रभारी मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने रविवार को कलेक्ट्रेट सभागार में दो चरणों में बैठक लेते हुए सरकारी कार्यों और योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की तथा आगामी वित्तीय वर्ष के बजट के मद्देनजर विभिन्न वर्गों से प्रस्ताव प्राप्त किए।

जिला प्रभारी मंत्री ने जिले में पेयजल उपलब्धता तथा वितरण की स्थिति, जल जीवन मिशन के तहत घर-घर कनेक्शन, गत वर्ष ग्रीष्मकाल के दौरान जल परिवहन तथा इस वर्ष के संभावित कंटीजेंसी प्लान सहित पेयजल व्यवस्था सुदृढ़ीकरण से जुड़े कार्यों की प्रगति जानी। प्रभारी मंत्री ने जिले में नए जीएसएस के निर्माण की प्रगति, घरेलू और कृषि उपभोक्ताओं को विद्युत सप्लाई, आरडीएसएस के तहत प्रगतिरत कार्यों तथा पीएम सूर्य घर एवं कुसुम योजना के तहत किए जा रहे कार्यों का फीडबैक लिया। चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह ने बजट घोषणा के तहत सड़क निर्माण से जुड़े कार्यों की प्रगति जानी। प्रत्येक विधानसभा में 15 करोड़ रूपए की सड़कों के कार्यों को अविलम्ब पूर्ण करने के निर्देश दिए।

चिकित्सा मंत्री तथा जिला प्रभारी मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक में विभिन्न वर्गों से आगामी बजट के लिए सुझाव लिए।

पीएमजीएसवाई के तहत स्वीकृत 213 किलोमीटर लम्बी 57 सड़कों एवं 10 अटल प्रगति पथ की प्रगति के बारे में जाना। प्रभारी मंत्री ने कहा कि पंच गौरव अभियान के तहत चयनित पर्यटन स्थल, खेल, उत्पाद और वनस्पति आदि को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार के निर्देशानुसार कार्य किया जाए। उन्होंने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जिला उत्थान योजना के तहत अब तक किए गए कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने विभागवार प्रगति के बारे में जाना।

बीकानेर पूर्व विधानसभा क्षेत्र विधायक सिद्धि कुमारी ने शहर के मुख्य सड़कों पर केट आइज लगाने और रोड मार्किंग करने तथा वृद्धजन भ्रमण पथ को जयपुर के सेंट्रल पार्क की तर्ज पर विकसित किए जाने की बात कही। बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास ने गेमनापीर रोड पर स्वीकृत जीएसएस शीघ्र शुरू करने तथा रीको की व्यवस्थाओं को उद्यमियों के लिए फ्रेंडली बनवाने के लिए कहा।

कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने बताया कि विधानसभा क्षेत्रों में 15-15 करोड़ की बजट स्वीकृति के आधार पर 234 कार्य प्रगतिरत हैं। इनमें से कई कार्य पूर्ण भी हो गए हैं। पीएमजीएसवाई के तहत सड़कों के निर्माण के लिए 117.58 करोड़ रूपए स्वीकृत किए गए हैं। जिले में स्वीकृत 10 में से चार अटल प्रगति पथ के कार्य पूर्ण हो चुके हैं तथा शहर के सार्वजनिक उद्यानों में सुविधाओं का विकास करवाया जा रहा है। बैठक में सुमन छाजेड़, नगर निगम आयुक्त मयंक मनीष, बीडीए आयुक्त अपर्णा गुप्ता सहित विभिन्न अधिकारी मौजूद थे।

- **आगामी वित्तीय वर्ष के बजट के मद्देनजर विभिन्न वर्गों से प्रस्ताव प्राप्त किए**

बैठक के दूसरे चरण में प्रभारी मंत्री ने आगामी बजट के मध्यनजर विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों से सुझाव प्राप्त किए। बीकानेर जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष द्वारका प्रसाद पचीसिया ने हवाई सेवा के विस्तार, ड्राईपोर्ट की घोषणा को क्रियान्वित करने, गैस पाइपलाइन तथा सिरेमिक उद्योग से जुड़े सुझाव रखे। बीकानेर व्यापार उद्योग मंडल के अध्यक्ष जुगल राठी ने जिले में स्किल डवलपमेंट ऑफिस खुलवाने, रीको की ओर से उद्यमियों को सस्ती दर पर भूखंड उपलब्ध करवाने तथा अनार खजूर की अलग मंडी स्थापित करने का सुझाव दिया।

## राजेन्द्र राठौड़ का 17 जनवरी को अनूपगढ़ दौरा

**अनूपगढ़,** (कासं)। राजस्थान के पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ 17 जनवरी को अनूपगढ़ का दौरा करेंगे। अनूपगढ़ सरपंच यूनियन ने नई ग्राम पंचायतों के गठन में उनकी भूमिका के सम्मान में एक स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया है। यह कार्यक्रम अनूपगढ़ पंचायत समिति में दोपहर एक बजे आयोजित होगा।

इस कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर अनूपगढ़ पंचायत समिति में सरपंच यूनियन की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में मौजूद पूर्व विधायक पवन दुग्गल ने कहा कि नई ग्राम पंचायतों के गठन से अनूपगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को गति मिलेगी। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी सरपंचों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। पूर्व विधायक पवन दुग्गल ने बताया कि अनूपगढ़ और घड़साना पंचायत समिति में नई ग्राम पंचायतों के गठन में राजेन्द्र राठौड़ के साथ-साथ वित्त आयोग के अध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी और राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अनूपगढ़ सरपंच यूनियन के अध्यक्ष एल.सी. डाबला ने बताया कि 17 जनवरी को राजेन्द्र राठौड़ विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। अनूपगढ़ पहुंचने पर सामाजिक, व्यापारिक और अन्य संगठनों द्वारा उनका स्वागत किया जायेगा।

## सार-समाचार

### लायंस क्लब ने गरीबों को कंबल बांटे

**लायंस क्लब मल्टीविजन ने झुग्गी-झोंपडियों में रहने वाले जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए।**

**बीकानेर,** (कासं)। मकर संक्रांति के पावन अवसर पर लायंस क्लब बीकानेर मल्टीविजन के तत्वावधान में 11 जनवरी को क्लब के सामान्य सदस्यों द्वारा पुरानी जेल सर्किल क्षेत्र में झुग्गी-झोंपडियों में निवास करने वाले जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए गए। क्लब सदस्यों ने बताया कि इस दौरान वहां मौजूद छोटे-छोटे बच्चे ठंड से ठिठुरते हुए पाये गए, जिस पर क्लब द्वारा ऐसे जरूरतमंद परिवारों को प्राथमिकता देते हुए कंबल वितरण किया गया। इस सेवा कार्य का उद्देश्य शीत ऋतु में असहाय एवं गरीब परिवारों को राहत प्रदान करना रहा। कंबल वितरण कार्यक्रम में लायन सुरेश चंद्र भसीन, लायन शशांक सक्सेना, लायन चंद्रकांता सोनी, सृष्टि ठकराल, अंकुर ठकराल, आरिफ खान, लायन राजेंद्र राजपुरोहित, लायन रचना सोनी, लायन नीरज भटनागर, लायन प्रमोद बहादुर सक्सेना, लायन उमाशंकर, लायन डॉ. सुचित्रा कश्यप, लायन विजय शर्मा एवं लायन अरूण जैन ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। क्लब पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने बताया कि लायंस क्लब बीकानेर मल्टीविजन द्वारा समय-समय पर इस प्रकार के सेवा कार्य किए जाते हैं ताकि समाज के वंचित वर्ग को सहायता पहुंचाई जा सके। स्थानीय लोगों ने भी क्लब के इस मानवीय प्रयास की सराहना की।

### 69 गलत भूमि आवंटन मामले उजागर

**बीकानेर,** (कासं)। सीमावर्ती क्षेत्र बज्जू में विशेष आवंटन के लिए आरक्षित भूमि का सामान्य में आवंटन का मामला सामने आया है। इससे सरकार को करोड़ों रुपए का चूना लग गया। इसके लिए तत्कालीन एसडीएम हरी सिंह को दोषी मानते हुए 16सीसीए के तहत चार्जशीट जारी की गई है। ऐसे 69 गलत आवंटनों को खारिज करने की तैयारी की जा रही है। बज्जू उपखंड में 2021 से 2023 तक बड़ी संख्या में भूमिहीन कृषकों को जमीनों का आवंटन हुआ था। उस दौरान गजट में प्रकाशित विशेष आवंटन की जमीन भी सामान्य श्रेणी में चहेतों को आंवटित कर दी गई। तहसील में विशेष आवंटन के 486 मामले पेंडिंग पड़े थे। केवल एक किसान को ही विशेष आवंटन हुआ, बाकी 69 को विशेष आवंटन की जमीनें सामान्य में आवंटित कर दी गईं। कुछ मामले पूर्व सैनिकों के भी थे। विधानसभा में सवाल उठाने के बाद सरकार की आंख खुली। राजस्व विभाग ने एडीएम सिटी की अध्यक्षता में जांच कमेटी बनाई। जांच के दौरान आवंटन की प्रक्रिया में भारी खामियां पाई गईं। कृषि भूमि का सामान्य या विशेष आवंटन करने के लिए आवंटन कमेटी होती है, जिसमें प्रकरण रखे जाते हैं, लेकिन इस प्रक्रिया को अपनाया ही नहीं गया। तत्कालीन बज्जू एसडीएम के पास कोलायत का भी चार्ज रहा है। आरोप है कि उस दौरान जिप्सम खनन क्षेत्र और कपिल सरोवर के कैचमेंट एरिया में भी जमीनों का आवंटन सामान्य श्रेणी में कर दिया गया। हालांकि शिकायत होने के बाद वह आवंटन निरस्त कर दिए गए थे। इन सभी आवंटनों को खारिज करने की सिफारिश जांच कमेटी ने की है। यदि आरक्षित जमीनों का आवंटन खुली बोली से होता तो सरकार को करोड़ों का राजस्व मिलता। धारा 22(3) के तहत अब तक 49 प्रकरण कलेक्टर कोर्ट में पेश किए जा चुके हैं। बाकी मामले विभिन्न न्यायालयों में वाद में लंबित के कारण तहसील को दस्तावेज नहीं मिल रहे। इस प्रकरण में आवंटन/मोहरबंद आवंटन के लिए आरक्षित भूमि को सामान्य आवंटन श्रेणी में आवंटित करने पर बज्जू के तत्कालीन आवंटन अधिकारी हरी सिंह शेखावत के खिलाफ कार्मिक विभाग ने 16 सीसीए के तहत चार्जशीट जारी करते हुए अनियमितताओं के तीन बिन्दुओं पर जवाब मांगा है।

### खुदाई में कारतूसों का जखीरा मिला

**बीकानेर,** (कासं)। महाजन में एक अस्पताल की खुदाई में 1100 से ज्यादा जिंदा कारतूस बरामद हुए हैं। अब कारतूस से भरा ये थैला कौन और कब छिपाकर गया, ये जांच का विषय है। दरअसल महाजन कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में चल रहे निर्माण कार्य में खुदाई के दौरान मजदूरों को जिंदा कारतूसों का जखीरा मिला। एक बार तो मजदूरों में हड़कम्प मच गया। बाद में इसकी सूचना पुलिस को दी गई। थाना अधिकारी भजनलाल ने बताया कि स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में निर्माण कार्य के दौरान ट्रैक्टर चलाया जा रहा था। जमीन को समतल करने के लिए चलाए गए ट्रेक्टर आगे बढ़ता, इससे पहले कुछ अटक रहा था। ट्रैक्टर में कुछ फंसा तो मजदूरों ने जाकर देखा तो एक प्लास्टिक का छोटा बोरा (कट्टा) फंसा हुआ था। इसमें कील जैसा कुछ सामान था। खोलकर देखा तो मजदूरों के होश उड़ गए। दरअसल इस कट्टे में जिंदा कारतूस भरे हुए थे। मौके पर मौजूद सभी मजदूर घबरा गए और पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने जाकर जब खोलकर देखा गया तो भीतर बड़ी संख्या में जिंदा कारतूस भरे हुए पाए गए। कारतूसों को अपने कब्जे में लेकर क्षेत्र को सुरक्षित किया। पुलिस ने बताया कि ये एसएलआर (सेल्फ लोडेड रिवॉल्वर) के राउंड बरामद किए हैं। ये कारतूस काफी पुराने है। लम्बे समय से जमीन में दबे होने के कारण इन पर जंग सी लग चुकी है और अब ये कारतूस खराब हो चुके हैं। कारतूसों की संख्या करीब 1100 बताई जा रही है। फिलहाल पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

### हेरोइन सहित दो युवक गिरफ्तार

**अनूपगढ़,** (कासं)। रावला पुलिस ने नशे के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। गश्त के दौरान दो युवकों को 10.74 ग्राम हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने मादक पदार्थ के परिवहन में इस्तेमाल की गई एक कार को भी जब्त कर लिया है। रावला एसएचओ बलवंत कुमार ने बताया कि अवैध मादक पदार्थों की रोकथाम के लिए ऑपरेशन सीमा संकल्प चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत एसएचओ अपनी टीम के साथ क्षेत्र में गश्त कर रहे थे। गश्त के दौरान बीएसएनएल कार्यालय के पास एक खंडहरनुमा दुकान में दो युवक संदिग्ध अवस्था में पाये गए। पूछताछ करने पर एक युवक ने अपना नाम खुशदिल (30) पुत्र बलवंत सिंह और दूसरे ने दिनेश कुमार (31) पुत्र कृष्ण लाल बताया। दोनों युवक रावला के गांव 13 केएनडी के निवासी हैं। पुलिस टीम को संदेह होने पर जब उनकी तलाशी ली गई, तो उनके पास से 10.74 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। पुलिस ने मौके पर ही दोनों युवकों को गिरफ्तार कर लिया और हेरोइन व कार को जब्त कर लिया। आरोपियों के खिलाफ रावला थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आगे की जांच की जा रही है।

# तीन साल में अरबों रूपयों की 158.500 किग्रा हेरोइन पकड़ी

**बीकानेर,** (कासं)। रेंज के जिलों में 10 साल पहले हेरोइन तस्करी का एक भी मामला नहीं था। उसके बाद पाक तस्करों ने बीकानेर और श्रीगंगानगर बॉर्डर पर नजरें गड़ाई और सेफ जोन मानकर यहां हेरोइन की तस्करी शुरू कर दी। अब पिछले तीन साल में अरबों रूपयों की 158.500 किग्रा हेरोइन पकड़ी गई है।

- **बीकानेर रेंज के जिलों में 10 साल पहले हेरोइन तस्करी का एक भी मामला नहीं था। उसके बाद पाक तस्करों ने बीकानेर और श्रीगंगानगर बॉर्डर पर नजरें गड़ाई और सेफ जोन मानकर यहां हेरोइन की तस्करी शुरू कर दी**

पाकिस्तान से ड्रोन के जरिए भारतीय सीमा में लगातार हेरोइन गिराए जाने की घटनाओं को देखते हुए सामने आया कि वर्ष 2015 में बीकानेर जोन के बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और चूरू जिलों में हेरोइन बरामदगी का एक भी मामला नहीं था।

हालांकि उससे एक साल पहले वर्ष 2014 में 0.02 किग्रा हेरोइन बरामद हुई थी। वर्ष 2020 तक बीकानेर रेंज में हेरोइन तस्करी के छोटे मामले ही हुए। तब तक पाकिस्तान से पंजाब बॉर्डर पर ही बड़े पैमाने पर तस्करी होती थी। उसके बाद वहां बॉर्डर और स्थानीय तस्करों पर सख्ती के बाद पाकिस्तानियों ने राजस्थान बॉर्डर को सेफ जोन मानते हुए रेगिस्तानी इलाके का रूख कर लिया। खासकर बीकानेर-श्रीगंगानगर के 396 किमी बॉर्डर एरिया से बड़े पैमाने पर तस्करी करने लगे। वर्ष 2021 में तो बीकानेर जिले में खाजूवाला बॉर्डर पर करीब 300 करोड़ रूपए की 54 किलो हेरोइन पकड़ी गई जो पाइप के जरिये भारतीय सीमा में भेजी गई थी। बॉर्डर पर तारबंदी और बीएसएफ की मुस्तैदी के कारण पाक तस्करों ने ड्रोन को हेरोइन भेजने का जरिया बना लिया।

रेंज कार्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक वर्ष, 16 में 0.072, 17 में 2.414, 18 में 0.414, 19 में 0.999, 20 में 10.137 और 21 में 60 किग्रा हेरोइन बरामद की गई। उसके बाद वर्ष, 22 में 27.186, 23 में 50.90, वर्ष 24 में 74.24 और वर्ष 25 में 33.226 किग्रा हेरोइन बरामद की गई है। ज्यादातर बीकानेर और श्रीगंगानगर में पाक बॉर्डर पर ही बरामद हुई है। रिटायर्ड एएसपी अरुण आहूजा ने बताया कि पाक तस्करों और स्थानीय खरीदारों में हवाला से होता है लेनदेन। करोड़ों रूपयों की हेरोइन पाकिस्तान से ड्रोन के जरिये राजस्थान बॉर्डर पर तस्करी की जाती है।

पंजाब में बैठे अपराधी और पाकिस्तान के हेरोइन तस्कर संपर्क में रहते हैं। पाकिस्तान से ड्रोन के जरिये हेरोइन राजस्थान बॉर्डर पर भेजी जाती है और पंजाब के अपराधी डिलीवरी लेने राजस्थान के बॉर्डर इलाकों में पहुंचते हैं। बीएसएफ और पुलिस ने ऐसे अपराधियों को पकड़ा भी है। सुरक्षा एजेंसियों ने पूछताछ की तो उजागर हुआ कि पंजाब के अपराधी और पाक तस्करों में डील होती है।

## अवैध डोडा-पोस्त सहित गिरफ्तार

**बज्जू,**(कासं)। रणजीतपुरा पुलिस ने गश्त के दौरान चक 25 केडब्लयूबी के पास करणेवाला रोड से एक संदिग्ध व्यक्ति को गिरफ्तार किया। उसके पास से प्लास्टिक के बोरे में 5 किलो अवैध डोडा-पोस्त जब्त किया गया। आरोपी की पहचान गज्जेवाला निवासी हनुमानाराम पुत्र कल्याणराम गोदारा के रूप में हुई है, जिसे एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार किया गया।

थानाधिकारी चंदजीत सिंह भाटी ने बताया कि शनिवार दोपहर बाद वे अपनी टीम के साथ सीमावर्ती क्षेत्र में गश्त कर रहे थे। गज्जेवाला से करणेवाला रोड पर चक 25 केडब्लयूडी के पास एक संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिया। पुलिस के रूकने का इशारा करने पर वह भागने लगा, जिसे पीछा कर पकड़ा गया। तलाशी के दौरान उसके पास एक काले रंग के कट्टे में भूरे रंग का डंठल और चूरा जैसा पदार्थ मिला। यह पदार्थ अवैध डोडा-पोस्त था, जिसका वजन 5.095 किलोग्राम था। इसे एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/15 के तहत जब्त कर आरोपी हनुमानाराम को गिरफ्तार कर लिया गया। इस मामले में आगे की जांच गजनेर थानाधिकारी सीआई राकेश स्वामी करेंगे।

# होटल पर कब्जे को लेकर दो पक्ष भिड़े

**बीकानेर,** (कासं)। एसपी ऑफिस से करीब दो सौ मीटर दूर स्थित एक होटल को लेकर विवाद का मामला सामने आया है। होटल पर कब्जे को लेकर दो पक्ष आमने सामने आ गए, जिससे इलाके में स्थिति तनावपूर्ण हो गई। घटना देर रात की है जब कोटगेट थाना इलाके में पुलिस ने मौके पर पहुंचकर कुछ लोगों को हिरासत में लिया और हालात पर काबू पाया।

कोटगेट थाना क्षेत्र के सार्दुल सिंह सर्किल के पास जमीन विवाद के चलते एक होटल पर कब्जे को लेकर दो पक्ष आमने सामने हो गए। होटल परिसर और बाहर के हिस्से में दोनों गुटों के लोग आपस में भिड़ गए। इस दौरान सड़क से गुजर रहे लोग डर के कारण वहां से हटने लगे। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस का भारी जाब्ता मौके पर पहुंचा। सीओ सिटी अनुज डाल और कोटगेट सीआई धीरेन्द्र सिंह स्वयं घटनास्थल पर पहुंचे और स्थिति को नियंत्रण में लिया। पुलिस की मौजूदगी के बाद हालात धीरे धीरे सामान्य हुए।

सीओ सिटी अनुज डाल ने बताया कि पांडे होटल के बाहर कुछ लोग अवैध तरीके से प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे। सूचना मिलने पर पुलिस तुरंत जाब्ता लेकर मौके पर पहुंची। फिलहाल पूरे मामले की जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार हथियारों की सूचना की पुष्टि अब तक नहीं हुई है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 6 से 7 लोगों को हिरासत में लिया है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार एक पक्ष द्वारा होटल पर जबरन कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा था। हिरासत में लिए गए लोगों से पूछताछ जारी है और जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जायेगी।

- **एसपी ऑफिस के पास होटल विवाद, हथियारों की आशंका, 6 से 7 लोग हिरासत में लिए**
- **हिरासत में लिए लोगों से पूछताछ जारी जांच के बाद होगी कार्रवाई**

# कक्कू क्षेत्र में घना कोहरा, तापमान 9 डिग्री

**कक्कू,** (कासं)। कक्कू और आसपास के क्षेत्रों में इन दिनों कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। पिछले कई दिनों से घना कोहरा छाए रहने के कारण पूरा इलाका सफेद चादर में लिपटा हुआ है।

सुबह के समय दृश्यता इतनी कम हो जाती है कि कुछ मीटर दूर तक देखना भी मुश्किल होता है। कोहरे के कारण तापमान गिरकर लगभग 9 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है, जिससे ठंड का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है। घने कोहरे के कारण सड़कों पर दृश्यता बहुत कम रही, जिससे वाहन चालकों को हेडलाइट जलाकर धीमी गति से चलना पड़ा। सुबह के समय कई स्थानों पर यातायात प्रभावित हुआ और कामकाजी लोगों को आवागमन में परेशानी हुई। बाजारों में भी सुबह सन्नाटा पसरा रहा और लोग चाय की दुकानों व चौपालों पर अलाव तापते देखे गए। ठंडी हवाओं के कारण दिनभर सर्दी का असर बना रहा। हालांकि दोपहर बाद कोहरा छंटने के बाद ही सामान्य गतिविधियां शुरू हो पाई। गांव की गलियों से लेकर खेतों तक हर जगह ठंड का प्रभाव स्पष्ट रूप से महसूस किया जा रहा है। दूसरी ओर यह मौसम किसानों के लिए वरदान साबित हो रहा है। किसानों के अनुसार, इस सीजन में लगातार मावठ (बारिश) हुई है, जो गेहूं, चना और सरसों सहित रबी की फसलों के लिए अत्यधिक लाभकारी है। खेतों में पर्याप्त नमी बनी रहने से फसलों की बढ़वार तेजी से हो रही है। किसानों का मानना है कि कोहरा और मावठ सोने की बूंदें हैं।

- **आमजन परेशान, रबी फसलों के लिए वरदान साबित**

## विधवा भाभी ने देवर के खिलाफ दुष्कर्म का केस दर्ज कराया

**श्रीडूंगरगढ़,** (कासं)। श्रीडूंगरगढ़ थाना क्षेत्र के एक गांव की विधवा महिला ने अपने देवर पर पिछले नौ वर्षों तक उसका शारीरिक शोषण करने, मारपीट कर घर से निकालने का आरोप लगाते हुए मामला इस्तगासे से दर्ज हुआ है। उसने आरोपी देवर सहित तीन लोगों पर आरोप लगाया है।

पीड़िता ने बताया कि उसके पति की मृत्यु करीब 10 साल पहले हो गई थी। पति के निधन के बाद वह अपनी ढाणी में रहकर जीवन यापन कर रही थी। इसी दौरान उसके देवर ने उसे सहारा देने और विवाह करने का झांसा दिया। आरोप है कि देवर पिछले 9 सालों से शादी का दिलासा देकर उसका लगातार शारीरिक शोषण करता रहा।

# गंगा सरोवर कैचमेंट एरिया में 31 की खातेदारी निरस्त करने की तैयारी

**बीकानेर,** (कासं)। कोलायत तहसील के गंगा सरोवर कैचमेंट एरिया में क्ले का अवैध खनन और निर्गमन कर सरकार को लाखों रूपए का चूना लगाने वाले 31 खातेदारों की खातेदारी निरस्त करने की तैयारी की जा रही है। इसी एरिया में हजारों टन अवैध खनन की चार नई एफआईआर गजनेर पुलिस थाने में दर्ज कराई गई है।

गंगा सरोवर में सालों तक क्ले का जमकर अवैध खनन और निर्गमन हुआ है। खान एवं भूविज्ञान विभाग ने जहां से अवैध खनन हुआ, उस जमीन के खातेदारों की खातेदारी निरस्त कराने के लिए कोलायत तहसीलदार को पत्र लिखा है। एसएमई एन.के. बैरवा के निर्देश पर एमई धीरज पंवार की ओर से 31 खातेदारों पर अवैध खनन निर्गमन करने किए जाने की जानकारी देते हुए उनकी खातेदारी निरस्त करने के लिए कहा गया है।

इसके अलावा फोरमैन रमेश गहलोत की ओर से गंगापुरा कैचमेंट एरिया में अलग-अलग पिटों से हजारों टन अवैध खनन करने पर खातेदारों के खिलाफ गजनेर पुलिस थाने में चार नई एफआईआर दर्ज कराई है। पूर्व में 22 एफआईआर दर्ज कराई गई थी।

फोरमैन की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि संतोष कुमार सैनी की ओर से गंगापुरा कैचमेंट एरिया के शिव सुथारान में खसरा नंबर 19 के पिट संख्या 3 से और 20540 टन व 41423 टन बॉल क्ले का अवैध खनन किया गया। शेरसिंह व अन्य ने किशनायतन बुधान में खसरा संख्या 107/15 के पिट संख्या पिट संख्या 4 में 50000 टन और पिट संख्या 5 से 47728 टन बॉल क्ले का अवैध खनन किया गया। गौरतलब है कि गंगापुरा कैचमेंट एरिया में खान विभाग की ओर से अन्य खातेदारों के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज कराई जा सकती है।

- **गंगापुरा के कैचमेंट एरिया में खान विभाग की ओर से अन्य खातेदारों के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज हो सकती है, चार एफआईआर गजनेर थाने में दर्ज**

## सर्वजातीय सामूहिक विवाह 25 को

**श्रीडूंगरगढ़,** (कासं)। श्रीडूंगरगढ़ कस्बे में पहली बार सेवा भारती समिति के तत्वावधान में राम जानकी सर्वजातीय विवाह समारोह होगा। इसके लिए आदर्श विद्या मंदिर स्कूल के खेल मैदान को सजाया जा रहा है।

सेवाधाम छात्रावास के प्रांगण में आयोजन समिति के अध्यक्ष श्यामसुंदर आर्य के सानिध्य में तैयारियों को लेकर बैठक हुई। आर्य ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य शादियों में होने वाली फिजूलखर्ची और आडम्बर को रोककर समाज में सकारात्मक संदेश देना है। पंजीकृत जोड़ों की पृष्ठभूमि की जांच और कानूनी प्रक्रिया पूर्ण करने का सुझाव सदस्यों ने दिया। महावीर माली ने वर्तमान शादियों में भोजन की बर्बादी पर चिंता जताते हुए इस पर पूर्ण रोक लगाने का सुझाव दिया। रूपचंद सोनी ने आडम्बर कम करने और कन्याओं को केवल आवश्यक एवं उपयोगी घरेलू सामान उपहार स्वरूप देने की राय दी।

# मनरेगा बचाओ संग्राम देशव्यापी अभियान में कांग्रेस का प्रतीकात्मक विरोध

**बीकानेर,** (कासं)। भाजपा-आरएसएस द्वारा मनरेगा महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना को कमजोर करने, महात्मा गांधी के नाम को हटाने तथा रोजगार के कानूनी अधिकार को समाप्त करने की साज़िश के विरोध में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आव्हान पर संपूर्ण भारत वर्ष में मनरेगा बचाओ संग्राम जनांदोलन की शुरूआत 10 जनवरी से प्रेसवार्ता से हो चुकी हैं।

इसी कड़ी में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार जिला कांग्रेस कमेटी बीकानेर देहात व शहर द्वारा विरोध स्वरूप संयुक्त रूप से उपवास कार्यक्रम दोपहर 12 बजे से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा स्थल गांधी पार्क पर आयोजित हुआ। उपवास कार्यक्रम के बाद पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री पुण्यतिथि के अवसर पर उनके तैलचित्र पर माल्यार्पण व पुष्पांजलि अर्पित कर स्मरण किया गया। उपवास कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जिला कांग्रेस कमेटी देहात अध्यक्ष बिशनाराम सियाग ने कहा कि मोदी सरकार ने वीबी जी राम जी के जरिए काम के कानूनी अधिकार को ही समाप्त कर दिया है। जो मज़दूरों के लिए आखरी सुरक्षा कवच था, लेकिन मनरेगा में बदलाव करने से नये कानून वीबीजीरामजी से बेरोज़गारी में वृद्धि, न्यूनतम मज़दूरी दिए बिना लोगों का श्रम के लिए शोषण, शहरों की ओर मजबूरी में होने वाले पलायन में वृद्धि, पंचायतों की शक्तियां, अधिकार और प्रासंगिकता कम हो जायेगी।

मनरेगा बचाओ संग्राम देशव्यापी अभियान में जिला कांग्रेस कमेटी देहात व शहर अध्यक्ष के नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने गांधी पार्क में उपवास कर प्रतीकात्मक विरोध किया।

इन्हीं कारणों को लेकर कांग्रेस पार्टी मनरेगा बचाओ संग्राम की चार मांगों को लेकर देशव्यापी आंदोलन कर रही हैं। मुख्य मांगे जैसे काम की गारंटी, मज़दूरी की गारंटी, जवाबदेही की गारंटी, मनरेगा में किए बदलावों की तत्काल वापसी, काम के संवैधानिक अधिकार की पूर्ण बहाली, न्यूनतम वेतन 400 रूपये। शहर अध्यक्ष मदनगोपाल ने कहा कि हाजरी और कार्यों के डिजिटल सत्यापन के लिए नेशनल मोबाइल मॉनिटरिंग सिस्टम ऐप लागू करने की मांग की।


राजस्थान सरकार

**कार्यालय खनि अभियन्ता खान एवं भू विज्ञान विभाग, बीकानेर**

क्रमांक: खअ/बीक/जिप्सम परमिट/202333091/2025-26/152 दिनांक: 09/01/2026

**जिप्सम परमिट नामान्तरण बाबत् विज्ञप्ति**

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस कार्यालय के क्षेत्राधिकार में स्वीकृत निम्नांकित जिप्सम परमिटधारी की मृत्यु हो चुकी है, अतः राजस्व अधिनियम खनिज रियायत नियमावली 2017 के नियम 76 (3) के अनुसार जिप्सम परमिटधारी के वारिसान द्वारा प्रार्थना पत्र पेश कर निम्नांकित जिप्सम परमिट का नामान्तरण करने का निवेदन किया गया है। जिप्सम परमिट नामान्तरण के संबंध में यदि किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की आपत्ति हो तो मय दस्तावेज इस विज्ञप्ति प्रकाशन के 15 दिवस में अपनी आपत्ति इस कार्यालय में दर्ज करावे, निर्धारित समयावधि पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी व नामान्तरण की कार्यवाही अमल में लाई जावेगी।

| क्र.सं. | रेफरेन्स नं. | क्षेत्र | खनिज | मृतक खनन पट्टाधारी जिसके नाम से खनन पट्टा धृत है | मृत्यु की दिनांक | मृतक के वारिसानों के नाम एवं मृतक से संबंध | | वसि नामे द्वारा सहमति उत्तराधिकारी का नाम जिसके पक्ष में नामान्तरण प्रस्तावित है | | विवि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | नाम | मृतक से संबंध | नाम | मृतक से संबंध | |
| 1 | 202333091 | मुरब्बा/खसरा नं. 68/31 निकट ग्राम 14 पीबी(बी) तहसील खाजूवाला जिला बीकानेर | जिप्सम | श्री जयसिंह पुत्र श्री नन्दराम | 21.09.2025 | श्रीमती भतेरी देवी | पत्नि | श्री जयप्रकाश जागिड़ | पुत्र | |
| | | | | | | श्रीमती शकुन्तला देवी | पुत्री | | | |
| | | | | | | श्रीमती उर्मिला देवी | पुत्री | | | |
| | | | | | | पार्वती | पुत्री | | | |
| | | | | | | मांगेराम | पुत्र | | | |
| | | | | | | जगदीश | पुत्र | | | |
| | | | | | | जयप्रकाश | पुत्र | | | |

(धीरज पंवार) खनिज अभियन्ता, बीकानेर

विराट के लिए 2024-2025 ऑस्ट्रेलिया दौरा खास नहीं रहा इस टूर पर कोहली ऑफ स्टंप्स से बाहर जाती गेंदों पर आउट हुए। जिसके बाद मांजरेकर ने कहा था कि विराट अपनी कमियों को दूर करने में नाकाम रहे और टेस्ट से रिटायरमेंट ले लिया :- संजय मांजरेकर

पूर्व भारतीय खिलाड़ी संजय मांजरेकर, विराट कोहली को लेकर बोलते हुए।

# खेल जगत

**आज का खिलाड़ी**

## रोहित शर्मा

हिटमैन रोहित शर्मा ने एक बार फिर कमाल कर दिखाया है। न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले वनडे में उन्होंने धमाकेदार बल्लेबाजी करते हुए दो छक्के जड़े और क्रिस गेल के रिकॉर्ड को धवस्त कर दिया और अब वनडे क्रिकेट इतिहास में बतौर ओपनर सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले दुनिया के नंबर 1 बल्लेबाज बन गए है। क्रिस गेल ने बतौर ओपनर वनडे में कुल 328 छक्के (274 पारियों में)लगाए थे, लेकिन अब रोहित शर्मा ने इस रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने 329 छक्के लगा दिए हैं और वह अब वनडे क्रिकेट में ओपनर के रूप में सबसे ज्यादा छक्के मारने वाले बल्लेबाज बन गए है।

**क्या आप जानते हैं ?...** साल 2006 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ कोलंबो टेस्ट मैच में श्रीलंका की पहली पारी में महेला जयवर्धने और कुमार संगकारा ने मिलकर तीसरे विकेट के लिए 624 रन की पार्टनरशिप की थी

# विराट पारी से भारत ने न्यूजीलैंड को चार विकेट से हराया

वड़ोदरा, 11 जनवरी (वार्ता) विराट कोहली (93), कप्तान शुभमन गिल (56) और श्रेयस अय्यर (49) की शानदार पारियों की बदौलत भारत ने रविवार को पहले एकदिवसीय न्यूजीलैंड को चार विकेट से शिकस्त दी। इसी के साथ भारत ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है।

301 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारत के लिए रोहित शर्मा और शुभमन गिल की सलामी जोड़ी ने 39 रन जोड़े। नौवें ओवर में काइल जैमीसन ने रोहित शर्मा को आउट कर न्यूजीलैंड को पहली सफलता दिलाई। रोहित शर्मा ने 29 गेंदों में तीन चौके और दो छक्के उड़ाते हुए 26 रन बनाये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये विराट कोहली ने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए 118 रन जोड़े। इस दौरान दोनों बल्लेबाजों ने अपने-अपने अर्धशतक पूरे किये। 27वें ओवर में आदित्य अशोक ने शुभमन गिल को फिलिप्स के हाथों कैच आउट कराकर पवेलियन भेज दिया। शुभमन गिल ने 71 गेंदों में तीन चौके और दो छक्के उड़ाते हुए 56 रनों की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये श्रेयस अय्यर ने मोर्चा संभाला और उन्होंने विराट कोहली के साथ तीसरे विकेट के लिए 77 रन जोड़े। इसी दौरान शतक के करीब विराट कोहली जेमीसन का शिकार बन गये। विराट कोहली ने 91 गेंदों में आठ चौके और एक छक्का उड़ाते हुए 93 रनों की पारी खेली।

इसी ओवर में जेमीसन ने रवींद्र जडेजा (चार) को भी अपना शिकार बनाकर भारत को चौथा झटका दिया।

42वें ओवर में जेमीसन ने अर्धशतक की ओर बढ़ रहे श्रेयस अय्यर को बोल्ड कर भारत को संकट में डाल दिया। श्रेयस अय्यर ने 24 गेंदों में चार चौके और एक छक्का लगाते हुए 49 रन बनाये। 47वें ओवर में क्लार्क ने हर्षित राणा को विकेट के पीछे कैच आउटकर कर मैच को रोमांचक मोड दे दिया। हर्षित राणा ने 23 गेंदों दो चौके और एक छक्का उड़ाते हुए 29 रन बनाये। केएल राहुल ने 49वें ओवर में दो चौकों के बाद ओवर की आखिरी गेंद पर विजयी छक्का लगाकर भारत का स्कोर छह विकेट पर 306 कर चार विकेट से जीत दिला दी।

केएल राहुल ने 21 गेंदों में दो चौके और एक छक्का लगाते हुए नाबाद 29 रन बनाये। वॉशिंगटन सुंदर सात रन बनाकर नाबाद रहे।

न्यूजीलैंड के लिए काइल जेमीसन ने चार विकेट लिये। आदित्य अशोक और क्रिस्टियन क्लार्क ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले सलामी बल्लेबाजों डेवन कॉन्वे (56) और हेनरी निकल्स (62) के अर्धशतकों के बीच 117 रनों की ओपनिंग साझेदारी के बाद डैरिल मिचेल के तूफानी 84 रनों की बदौलत न्यूजीलैंड ने भारत के खिलाफ 50 ओवरों में आठ विकेट पर 300 रन का मजबूत स्कोर बनाया।

मिचेल ने 71 गेंदों में अपनी तूफानी पारी में पांच चौके और तीन छक्के लगाये। कॉन्वे ने 67 गेंदों में छह चौके और एक छक्का मारा जबकि निकल्स ने 69 गेंदों में आठ चौके लगाये। भारत की ओर से मोहम्मद सिराज, हर्षित राणा और प्रसिद्ध कृष्णा ने दो-दो विकेट लिये। कुलदीप यादव ने 52 रन देकर एक बल्लेबाज को आउट किया।

आज यहां भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। 20 ओवरों के बाद भारतीय गेंदबाजों (हर्षित राणा) ने पिच पर जम चुके न्यूजीलैंड के दोनों सलामी हेनरी निकल्स और डेवन कॉन्वे के विकेट झटक कर अपनी टीम की मैच में वापसी कराई।

इसके बाद मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव और प्रसिद्ध कृष्णा ने तीन अन्य विकेट लेकर न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों को दबाव में लाकर उनके रनों की रफ्तार पर लगाम लगाई।

विल यंग (12), ग्लेन फिलिप्स (12), मिचेल हे 18 रन बनाकर आउट हुये। क्रिस्टियन क्लार्क ने 17 गेंदों पर तीन चौकों की मदद से नाबाद 24 रन बनाये और न्यूजीलैंड को 300 तक पहुंचाया।

इसके बाद कप्तान माइकल ब्रेसवेल ने डैरिल मिचेल के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। दोनों बल्लेबाजों के बीच छठे विकेट के लिए 39 रनों की साझेदारी हुई। 43वें ओवर में श्रेयस अय्यर ने माइकल ब्रेसवेल (16) को रनआउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। अगले ही ओवर में मोहम्मद सिराज ने जैकरी फॉक्स को बिना खाता खोले ही पवेलियन भेज दिया।

48वें ओवर में प्रसिद्ध कृष्णा ने शतक की ओर बढ़ रहे डैरिल मिचेल को पगबाधा आउटकर न्यूजीलैंड को आठवां झटका दिया।

## वैभव सूर्यवंशी फिर एक्शन में: अंडर 19 विश्व कप 2026 आगाज जल्द

नई दिल्ली। साल के पहले आईसीसी इवेंट की शुरुआत होने में कुछ दिन ही बचे हैं। भारत और श्रीलंका की संयुक्त मेजबानी में होने वाले टी20 विश्व कप 2026 से पहले आईसीसी अंडर-19 विश्व कप 2026 का आगाज होने जा रहा है। इस अंडर-19 विश्व कप की शुरुआत 15 जनवरी से होगी और फाइनल 6 फरवरी को खेल जाएगा। टूर्नामेंट के पहले ही मैच में भारतीय अंडर-19 टीम का सामना यूएई की युवा टीम से होगा। यह मैच बुलावायो के क्वींस स्पोर्ट्स क्लब में खेला जाएगा। ऐसे में वैभव सूर्यवंशी कुछ दिन बाद ही एक्शन में नजर आने वाले हैं। भारतीय सनसनी वैभव इन दिनों शानदार फॉर्म में भी चल रहे हैं। वॉर्म-अप मैच में उन्होंने अपनी फॉर्म का ट्रेलर भी दिखाया और अर्धशतकीय पारी खेली। हालांकि, शतक के बेहद करीब पहुंचकर वह आउट हो गए। शनिवार को बुलावायो एथलेटिक क्लब में स्कॉटलैंड अंडर-19 के खिलाफ उन्होंने 50 गेंदों में 96 रनों की धमाकेदार पारी खेली। अपनी तूफानी पारी में उन्होंने 9 चौके और 7 छक्के लगाए। वैभव ने महज 27 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। उन्होंने सिक्स लगाकर अपनी फिफ्टी पूरी की। मनु सारस्वत ने वैभव को 96 रन पर आउट किया था। हाल ही में वैभव की कप्तानी में खेली गई 3 मैचों की यूथ वनडे सीरीज पर भारत ने कब्जा जमाया था। वैभव इस सीरीज में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज थे। उन्होंने 3 पारियों में 206 रन बनाए थे।

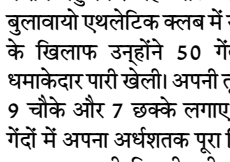

## साइड स्ट्रेन के कारण पंत हुए एकदिवसीय सीरीज से बाहर

वडोदरा 11 जनवरी (वार्ता) भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत रविवार को अभ्यास के दौरान लगी साइड स्ट्रेन के कारण न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज से बाहर हो गए हैं। ध्रुव जुरेल को उनकी जगह टीम में शामिल किया गया है और वह वडोदरा में टीम से जुड भी चुके हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने जारी एक बयान में कहा, पंत को शनिवार अभ्यास सत्र के दौरान नेट्स में बल्लेबाजी करते समय दाईं तरफ पसलियों के पास अचानक दर्द महसूस हुआ। उन्हें तुरंत एमआरआई स्कैन के लिए ले जाया गया। इसके बाद बीसीसीआई का चिकित्सा दल ने विशेषज्ञ के साथ उनकी क्लिनिकल और रेडियोलॉजिकल रिपोर्ट पर विस्तार से चर्चा की। पंत को साइड स्ट्रेन की पुष्टि हुई है और उन्हें एकदिवसीय सीरीज से बाहर कर दिया गया है। हालांकि पंत की चोट भारतीय टीम के संयोजन को अधिक प्रभावित नहीं करती क्योंकि के एल राहुल एकदिवसीय में पहले से ही नियमित विकेटकीपर हैं। हालांकि पंत अच्छे फॉर्म में थे और दिल्ली की कप्तानी करते हुए उन्होंने टीम को विजय हजारे ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल तक पहुंचाया था। उन्होंने इस दौरान छह पारियों में दो अर्धशतक लगाए। वहीं जुरेल भी विजय हजारे ट्रॉफी में शानदार फॉर्म में हैं और उन्होंने पिछली सात पारियों में छह 50 से अधिक के स्कोर बनाए हैं, जिसमें दो शतक शामिल हैं। उनकी इस बल्लेबाजी से उत्तर प्रदेश की टीम भी क्वार्टर फाइनल में पहुंच चुकी है। पहले एकदिवसीय के बाद वडोदरा से टीमें राजकोट (14 जनवरी) और इंदौर (18 जनवरी) में खेलेंगी, उसके बाद उनका ध्यान पांच मैचों की टी-20 पर रहेगा, जो नागपुर (21 जनवरी), रायपुर (23 जनवरी), गुवाहाटी (25 जनवरी), विशाखापत्तनम (28 जनवरी) और तिरुवनंतपुरम (31 जनवरी) में खेली जाएगी। यह सीरीज टी-20 विश्व कप की तैयारी के लिए अहम मानी जा रही । टी-20 विश्व कप फरवरी-मार्च में भारत और श्रीलंका में खेला जाएगा। इस सीरीज के लिए ऋषभ पंत और ध्रुव जुरेल भारत की टी-20 टीम में नहीं हैं। एकदिवसीय सीरीज के लिए भारतीय टीम इस प्रकार है:- शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, के एल राहुल (विकेटकीपर), श्रेयस अय्यर (उपकप्तान), वाशिंगटन सुंदर, रवींद्र जडेजा, मोहम्मद सिराज, हर्षित राणा, प्रसिद्ध कृष्णा, कुलदीप यादव, नीतीश कुमार रेड्डी, अर्शदीप सिंह, यशस्वी जायसवाल और ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर)।

## वर्ल्ड नंबर 1 शी चोट के कारण बाहर, थाईलैंड के विटिडसर्न बने चैंपियन

कुआलालंपुर, 11 जनवरी (वार्ता) चीन के वर्ल्ड नंबर 1 शी यूकी रविवार को थाईलैंड के कुनलावुत विटिडसर्न के खिलाफ मलेशिया ओपन फाइनल के दौरान पीठ की चोट के कारण रिटायर हो गए। मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन शी दर्द में खेल रहे थे, लेकिन पहला गेम 21-23 से हारने के बाद उन्होंने मैच छोड़ दिया। मैच के बाद उन्होंने कुनलावुत की तारीफ की। उन्होंने कहा, "कुनलावुत हमेशा से बहुत मजबूत खिलाड़ी रहे हैं और अभी दुनिया के टॉप खिलाड़ियों में से एक हैं। उनके खिलाफ खेलना हमेशा एक सीखने वाला अनुभव होता है, खासकर इस तरह के फाइनल स्टेज पर।" महिला सिंगल्स फाइनल में, दक्षिण कोरिया की ओलंपिक चैंपियन एन से-यंग ने चीन की वांग झेई को 21-15, 24-22 से हराया। वांग ने कहा कि दूसरे गेम में उनके पास मैच पलटने के मौके थे, लेकिन अहम पलों में वह चूक गईं। उन्होंने कहा, "जब मैं पिछड़ रही थी, तो मुझे बेहतर टैक्टिकल जवाब देने चाहिए थे। मुझे उम्मीद है कि अगली बार मैं बेहतर प्रदर्शन करूंगी।

## पोलैंड ने पहली बार जीता यूनाइटेड कप खिताब

सिडनी, 11 जनवरी (वार्ता) ह्यूबर्ट हुरकाज ने चोट से वापसी करते हुए एक भावुक जीत हासिल की और यूनाइटेड कप फाइनल में पिछले दो सालों की निराशा को मिटा दिया, जब उन्होंने रविवार रात सिडनी में मिक्स्ड टीम इवेंट में स्विट्जरलैंड पर पोलैंड की 2-1 की करीबी चैंपियनशिप जीत में अहम भूमिका निभाई। घुटने की सर्जरी के बाद सात महीनों में अपना पहला टूर्नामेंट खेलते हुए, पूर्व वर्ल्ड नंबर 6 को इगा स्विएटेक के बेलिंडा बेनसिक से 3-6, 6-0, 6-3 से हारने के बाद अपनी टीम को जीवित रखने के लिए स्टैन वावरिंका पर 6-3, 3-6, 6-3 से जीत की जरूरत थी, जिन्होंने टूर्नामेंट को 5-0 के सिंगल्स रिकॉर्ड के साथ खत्म किया। खिताब दांव पर होने पर, जान ज़िलिंस्की एक बार फिर शानदार फॉर्म में थे, जब उन्होंने कतरज़ीना कावा के साथ मिलकर अपना पांचवां मिक्स्ड डबल्स खिताब 6-4, 6-3 से जीता, जो पहले से अजेय रहे जैकब पॉल और बेनसिक के खिलाफ था, जो मैच प्ले में 10-0 के परफेक्ट रिकॉर्ड के साथ टूर्नामेंट खत्म करने की कोशिश कर रही थीं। बेनसिक को यूनाइटेड कप फाइनल्स की सबसे मूल्यवान खिलाड़ी चुना गया। यह 40 वर्षीय स्विस कप्तान वावरिंका के लिए एक भावुक रात थी, जो अपने विदाई सीजन की शुरुआत एक अप्रत्याशित यूनाइटेड कप खिताब के साथ करने की उम्मीद कर रहे थे।

साहसी वावरिंका ने पूरे इवेंट में चार तीन-सेट के मैच खेले, लेकिन आखिरकार अपने पांच सिंगल्स मैचों में सिर्फ एक जीत के साथ ही संतोष करना पड़ा। हुरकाज़ ने वावरिंका पर 18 ऐस मारे और अपने सामने आए नौ में से आठ ब्रेक पॉइंट बचाए, जो इस हफ्ते 40 वर्षीय खिलाड़ी के कवच में एकमात्र कमजोरी को उजागर करता है। हालांकि उन्होंने दूसरे सेट को जीतने के रास्ते में एक महत्वपूर्ण ब्रेक हासिल किया, लेकिन तीन बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने अपने पांच सिंगल्स मैचों में 23 ब्रेक पॉइंट अवसरों में से सिर्फ दो को ही भुनाया।

## कलमाडी को श्रद्धांजलि देने के लिए प्रार्थना सभा 17 को

नयी दिल्ली, 11 जनवरी (वार्ता) एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, सुरेश कलमाडी, एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करता है, जिनका भारतीय एथलेटिक्स में योगदान महत्वपूर्ण और स्थायी रहेगा। कलमाडी की याद में श्रद्धांजलि देने और शोक व्यक्त करने के लिए एक प्रार्थना सभा 17 जनवरी को दोपहर 3:00 बजे से 4:00 बजे तक इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित की जायेगी।

# सबालेंका ने कोस्त्युक को हराकर 22वां करियर खिताब जीता

ब्रिस्बेन, 11 जनवरी (वार्ता) दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी आर्यना सबालेंका ने रविवार को ब्रिस्बेन इंटरनेशनल फाइनल में मार्टा कोस्त्युक को हराकर अपने करियर का 22वां सिंगल्स खिताब और 2026 का पहला खिताब जीता।

सबालेंका ने रविवार शाम को एक घंटे और 18 मिनट में दुनिया की नंबर 26 खिलाड़ी कोस्त्युक को 6-4, 6-3 से हराकर लगातार दूसरे साल ब्रिस्बेन इंटरनेशनल खिताब जीता।

कोस्त्युक पर जीत के साथ सबालेंका ने

ऑस्ट्रेलियन ओपन वार्म-अप इवेंट में अपना शानदार प्रदर्शन पूरा किया, जहां उन्होंने अपने पांच मैचों में एक भी सेट नहीं हारा। इससे सबालेंका टूर्नामेंट के 17 साल के इतिहास में ब्रिस्बेन इंटरनेशनल में लगातार खिताब जीतने वाली तीसरी महिला खिलाड़ी बन गईं और 2023 की शुरुआत से ऑस्ट्रेलिया में मैचों में उनका रिकॉर्ड 38 जीत और दो हार हो गया। सबालेंका ने कोस्त्युक की सर्विस तोड़ी, जिन्होंने फाइनल में पहुंचने के लिए तीन टॉप-10 विरोधियों को हराया था, पहले और दूसरे सेट में दोनों में 3-0 की बढ़त बनाई।

यूक्रेनी खिलाड़ी पहले सेट में वापसी करने में कामयाब रही, लेकिन दूसरे सेट में ऐसा नहीं कर पाई, क्योंकि सबालेंका ने बीच में एक ऐस के साथ दो चैंपियनशिप पॉइंट बनाए और पहले ही पॉइंट को एक शक्तिशाली वाइड सर्व के साथ बदल दिया।

## जालोर जिले की आकांक्षा कुमावत ने पॉवर लिफ्टिंग में बनाया नया राष्ट्रीय कीर्तिमान

**इक्युपड एंड क्लासिक बेंच प्रेस प्रतियोगिता में दिल्ली में जीते गोल्ड मेडल**

जालोर। फरीदाबाद , दिल्ली में 07 जनवरी से 11 जनवरी तक आयोजित हुई 34वीं राष्ट्रीय सीनियर, जूनियर, सब जूनियर एवं मास्टर्स इक्युपड एंड क्लासिक बेंच प्रेस प्रतियोगिता-2025-26 में जिले के गांव बावड़ी, तहसील आहोर की बेटी आकांक्षा कुमावत ने पॉवर लिफ्टिंग में नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया है। राजस्थान राज्य पावरलिफ्टिंग संघ के सचिव विनोद साहू ने बताया कि सब जूनियर बालिका टीम का नेतृत्व कर रही आकांक्षा कुमावत ने 57 किलो भार वर्ग में 77.5 किलोग्राम वजन उठाकर गोल्ड मेडल जीता है। आकांक्षा ने 57 किलोग्राम भार वर्ग में 77.5 किलोग्राम भार उठाकर राष्ट्रीय नया कीर्तिमान बनाया है, इससे पहले 57 किलोग्राम भार वर्ग में 72.5 किलोग्राम वजन उठाने का राष्ट्रीय कीर्तिमान था। इसी तरह आकांक्षा कुमावत ने इक्युपड बेंच प्रेस में भी 57 किलोग्राम भार वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए 95 किलो वजन उठाकर नया राष्ट्रीय कीर्तिमान बनाते हुए गोल्ड मेडल जीता है। इससे पहले इक्युपड बेंच प्रेस के इस भार वर्ग का राष्ट्रीय रिकार्ड 87.5 किलोग्राम था। दो वर्गों में गोल्ड मेडल जीतने के साथ ही आकांक्षा कुमावत स्ट्रॉग वुमन ऑफ इंडिया का खिताब भी अपने नाम किया। इस जीत का श्रेय आकांक्षा ने अपने कोच लोकेश कुमार व पूनम पूनिया को दिया है।

## विराट कोहली का इंटरनेशनल क्रिकेट में बड़ा कारनामा, कुमार संगाकारा का रिकॉर्ड तोड़कर रचा इतिहास

नई दिल्ली। विराट कोहली ने नए साल की शुरुआत एक कीर्तिमान के साथ की। वडोदरा में न्यूजीलैंड के खिलाफ 25 रन बनाते ही विराट कोहली के इंटरनेशनल क्रिकेट में 28000 रन पूरे हो गए। वह इस उपलब्धि को हासिल करने वाले दुनिया के तीसरे क्रिकेटर बन गए हैं। इससे पहले सचिन तेंदुलकर और कुमार संगाकारा के नाम यह रिकॉर्ड है। कोहली ने 557वें मैच की 624 पारियों में इस उपलब्धि को हासिल किया।

पहले वनडे की बात करें तो भारत के कप्तान शुभमन गिल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया।

टॉस हारकर बैटिंग करने उतरी न्यूजीलैंड ने 50 ओवर में 8 विकेट खोकर 300 रन बनाए। 301 रन चेज करने उतरी भारतीय टीम को रोहित शर्मा और गिल ने सधी हुई शुरुआत दिलाई।

दोनों के बीच 39 रनों की साझेदारी हुई। 9वें ओवर में रोहित शर्मा कैच आउट हुए और विराट कोहली मैदान पर आए। कोहली ने आते ही अपनी क्लास दिखाना शुरू की।

मुकाबले में 42 रन बनाते ही कोहली ने एक और रिकॉर्ड अपने नाम किया। वह अब इंटरनेशनल क्रिकेट में दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। इस लिस्ट में टॉप पर अब सचिन तेंदुलकर हैं। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन ने 664 इंटरनेशनल मैच की 782 पारियों में 34357 रन बनाए। अपने करियर में तेंदुलकर ने 100 शतक और 164 अर्धशतक लगाए।

## यास्तिका भाटिया डब्ल्यूपीएल 2026 से बाहर

नवी मुम्बई 11 जनवरी (वार्ता) गुजरात जायंट्स (जीजी) की विकेटकीपर बल्लेबाज यास्तिका भाटिया वूमेंस प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2026 से बाहर हो गई हैं।

भाटिया की उपलब्धता को पहले से ही संशय बना हुआ था क्योंकि अक्तूबर में उनकी एसीएल सर्जरी हुई थी। डब्ल्यूपीएल ने नीलामी से पहले ही तमाम फ्रैंचाइजी को सूचित कर दिया था कि अगर कोई टीम उन्हें खरीदती है तो उनके लिए रिप्लेसमेंट विकल्प नहीं दिया जाएगा। इसके बावजूद जीजी और यूपी वॉरियर्ज ने उनके लिए बोली लगाई और जीजी ने 50 लाख में उन्हें खरीद लिया।

## टीम एच.डी.एफ.सी. बैंक ने आख़िरी गेंद पर जीता पहला मणिपाल कप-2026

जयपुर, 11 जनवरी। रोमांच से भरे फाइनल में आख़िरी गेंद तक संघर्ष के बाद टीम एचडीएफसी बैंक ने मेज़बान मणिपाल यूनिवर्सिटी जयपुर (एमयूजे) को तीन विकेट से हराकर मणिपाल कप-2026 क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब अपने नाम किया। पहले बल्लेबाज़ी करते हुए एमयूजे ने 57 रनों का साधारण लक्ष्य दिया। विकेटों के लगातार गिरने के बावजूद एचडीएफसी बैंक ने लक्ष्य का पीछा जारी रखा और आठ ओवरों के मैच की अंतिम गेंद पर जीत दर्ज की। मैच के बाद एमयूजे के कुलपति, डॉ. नीति निपुण शर्मा ने विजेता टीम के कप्तान श्री गौरव तिवारी को मणिपाल कप ट्रॉफी प्रदान की।

यह टूर्नामेंट एमयूजे द्वारा ईयर आफ कोलाबरेसन पहल के अंतर्गत आयोजित किया गया था, जिसमें चार टीमें - मणिपाल हॉस्पिटल्स, एचडीएफसी बैंक, ग्राविटा और मणिपाल यूनिवर्सिटी जयपुर - शामिल हुए। शुरुआती दो मुकाबले नॉकआउट प्रारूप में खेले गए। पहले मैच में एचडीएफसी बैंक ने मणिपाल हॉस्पिटल्स को हराया, जबकि दूसरे मैच में एमयूजे ने ग्राविटा को पराजित कर फाइनल में जगह बनाई।

पोस्ट-मैच प्रेज़ेंटेशन में कई उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। एचडीएफसी बैंक के रूपेश गर्ग को सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज़ और मैन ऑफ द सीरीज़ चुना गया। एमयूजे के श्री मन मोहन मेहता को सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज़ का पुरस्कार मिला, जबकि एमयूजे के ही श्री सुरेश मीणा को बेस्ट इम्पैक्ट प्लेयर ट्रॉफी प्रदान की गई।

पुरस्कार वितरण समारोह में एमयूजे के कुलपति डॉ. नीति निपुण शर्मा, प्रोवोस्ट डॉ. नितु भटनागर, रजिस्ट्रार डॉ. अमित सोनी, सीडीओई के निदेशक डॉ. मल्लिकार्जुन गडप्पा तथा हेड ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज़ सुश्री काननजीत कौर शामिल थीं। इनके साथ एचडीएफसी बैंक की ओर से वाइस प्रेसिडेंट श्री जस्मीत सिंह भी मंच पर उपस्थित रहे।

दिन की शुरुआत में मणिपाल कप-2026 का औपचारिक उद्घाटन चारों संस्थानों के गणमान्य प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया।

# विद्युत निगमों की टेनिस, बैडमिंटन और टेबल टेनिस खेल प्रतियोगिता संपन्न

## युगल मुकाबलो में प्रसारण, उत्पादन और डिस्कॉम के खिलाड़ी संयुक्त रूप से विजेता रहे

जयपुर, 11 जनवरी । दिनांक 8 जनवरी 2026 से जयपुर स्थित सभी विद्युत निगमों के खिलाड़ियों के मध्य चल रही टेनिस, टेबल टेनिस और बैडमिंटन प्रतियोगिता रविवार को जयपुर क्लब में संपन्न हुई। उपरोक्त खेल प्रतियोगिताओं में विद्युत निगमों के महिला एवं पुरुष कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के टेबल टेनिस के मुकाबले में पुरुष युगल में उत्पादन निगम के क्षितिज सिंह राठौड़ और जयपुर डिस्कॉम के तनुराज वर्मा की जोड़ी विजेता तथा उत्पादन निगम के पवन शर्मा और प्रसारण निगम के दीपक शर्मा की जोड़ी उप विजेता रही।

टेनिस के दिलचस्प मुकाबलो में पुरुष सिंगल्स में जोधपुर डिस्कॉम के अरुण कुमार विजेता रहे तथा जयपुर डिस्कॉम के सुमित कुमार चौधरी उपविजेता रहे लॉन टेनिस की पुरुष डबल्स प्रतियोगिता में उत्पादन निगम के पवन शर्मा और जोधपुर डिस्कॉम के

अरुण कुमार की जोड़ी विजेता तथा उत्पादन निगम के मनीष शर्मा और जयपुर डिस्कॉम के सुमित कुमार चौधरी की जोड़ी उप विजेता रही।

बैडमिंटन के रोमांचक मुकाबलो में पुरुष सिंगल्स में प्रसारण निगम के महेश परेवा विजेता रहे तथा प्रसारण निगम के ही महेंद्र कुमावत विजेता रहे।

पुरुष युगल में प्रसारण निगम के महेंद्र कुमावत एवं महेश परेवा की जोड़ी विजेता तथा उत्पादन निगम के अमित गर्ग एवं सतीश विधूड़ी की जोड़ी उप विजेता रही।

बैडमिंटन में महिला सिंगल्स की विजेता ऊर्जा विकास निगम की श्वेता केन तथा उपविजेता प्रसारण निगम की मोनिका जैन रही। महिला युगल की विजेता ऊर्जा विकास निगम की श्वेता केन और उत्पादन निगम की अंजलि चौधरी की जोड़ी तथा उपविजेता उत्पादन निगम की ज्योति वर्मा और प्रसारण निगम की कल्पना गजराज के जोड़ी रही।

प्रतियोगिता के समापन पर प्रसारण निगम के मुख्य कार्मिक अधिकारी अमिताभ गुप्ता ने सभी विजेता खिलाड़ियों का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया। प्रतियोगिता के दौरान सभी विद्युत निगम के महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों ने जोश के साथ बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

मुख्य कार्मिक अधिकारी अमिताभ गुप्ता ने बताया कि वार्षिक खेलकूद की प्रतियोगिताओं के विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को विद्युत भवन में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।

# विकसित राजस्थान के निर्माण में सामाजिक संस्थाओं की भागीदारी जरूरी है- भजनलाल

## मुख्यमंत्री ने राज्य के प्रमुख एनजीओ, सिविल सोसायटी व उपभोक्ता फोरम प्रतिनिधियों से बजट पूर्व संवाद किया

जयपुर, 11 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि सामाजिक संगठन जन आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम हैं तथा इनके अनुभव एवं सुझाव जनकल्याण को दिशा देने में सहायक होते हैं। उन्होंने कहा कि विकसित एवं उत्कृष्ट राजस्थान के निर्माण में एनजीओ, सिविल सोसायटी एवं उपभोक्ता मंच की भागीदारी भी जरूरी है। ये संस्थाएं जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में प्रभावी कड़ी बन सकती हैं।

शर्मा रविवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में एनजीओ, सिविल सोसाइटी और उपभोक्ता फोरम के प्रतिनिधियों से बजट पूर्व संवाद कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इन संवादों के जरिए विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों से सुझाव ले रही है।

संवाद कार्यक्रम में जिला दिव्यांग सेवा संस्थान (जालोर), अर्पण सेवा संस्थान, घुमंतू कल्याण संस्थान, प्रयास संस्थान, कट्स संस्थान, एसडब्ल्यूआरसी तिलोनिया, सेन्ट्रल फॉर डवलपमेंट कम्यूनिकेशन जयपुर, अपना घर आश्रम, टाबर संस्थान, सक्षम संस्थान, सिविल राईट सोसायटी, शांति देवी जनकल्याण ट्रस्ट, अलख फाउंडेशन, चौथमल पुजारी चैरिटेबल ट्रस्ट, कन्ज्यूमर एक्शन एण्ड नेटवर्क, जनाधिकार समिति, सेन्टर फॉर दलित राईट्स सहित अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने सुझाव दिए। इन प्रतिनिधियों ने दिव्यांग कल्याण, महिला उत्थान, घुमंतू कल्याण, उपभोक्ता कल्याण, पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, पुनर्वास केन्द्रों एवं स्वयं सहायता समूहों के सशक्तीकरण जैसे विषयों पर अपनी राय रखी। साथ ही, उन्होंने राज्य सरकार द्वारा पिछले 2 वर्षों में स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में लिए गए जनकल्याणकारी फैसलों की सराहना की। मुख्यमंत्री ने प्रतिभागियों के सुझावों को गंभीरता से सुना। उन्होंने कहा कि प्राप्त सुझावों का विश्लेषण करते हुए आगामी बजट में समाहित करने का प्रयास किया जाएगा। इस अवसर पर अतिरिक्त मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास श्रेया गुहा, प्रमुख शासन सचिव वित्त वैभव गालरिया सहित वरिष्ठ अधिकारीगण एवं विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

*मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में एनजीओ, सिविल सोसाइटी और उपभोक्ता फोरम के प्रतिनिधियों से बजट पूर्व संवाद किया।*

- **संवाद कार्यक्रम में संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने दिव्यांग, महिला, घुमंतू, उपभोक्ता, पर्यावरण आदि विषयों पर अपने विचार रखे तथा गत दो वर्षों में स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में राज्य सरकार के फैसलों की सराहना की।**

# ईरान के राष्ट्रपति प्रदर्शनकारियों से बात करने को तैयार

तेहरान, 11 जनवरी। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने देशभर में चल रहे विरोध प्रदर्शनों के बीच रविवार को कहा कि वह प्रदर्शनकारियों की मांगें सुनने के लिये तैयार हैं, लेकिन दंगाई पूरे समाज को तबाह करने में लगे हैं।

पेज़ेशकियान ने सरकारी न्यूज़ एजेंसी आईआरआईबी को दिये गये एक साक्षात्कार में कहा, ''लोगों की अपनी चिंताएं हैं। हमें उनके साथ बैठना चाहिए और हमें उन चिंताओं का हल निकालना चाहिए। लेकिन इससे भी ज़्यादा ज़रूरी है कि दंगाइयों के समूह को पूरे समाज को तबाह न करने दिया जाये।'' पेज़ेशकियन ने अमेरिका और इज़रायल पर ईरान में अस्थिरता पैदा करने के लिए ''दंगाइयों'' को आदेश देने का भी आरोप लगाया। ये टिप्पणियां ऐसे समय में आई हैं जब हाल के दिनों में ईरानी पुलिस और सरकार और इन कथित ''दंगाइयों'' के बीच जानलेवा झड़पों की खबरें मिली हैं। ये झड़पें दिसंबर के आखिर से कई ईरानी शहरों में, ईरानी मुद्रा रियाल की कीमत में भारी गिरावट और लंबे समय से चली आ रही आर्थिक मुश्किलों को लेकर हो रहे विरोध प्रदर्शनों के बीच हुई हैं। उल्लेखनीय है कि आर्थिक तंगी को लेकर ईरान में बीते दो हफ्तों से विरोध प्रदर्शन जारी हैं। नॉर्वे के एक मानवाधिकार समूह के अनुसार, इन प्रदर्शनों में अब तक 192 लोग मारे जा चुके हैं।

# ईरान की संसद में ''अमेरिका मुर्दाबाद'' के नारे लगे

## अमेरिका ने हमला किया तो अमेरिकी व इज़रायली सेनाओं को निशाना बनाने की चेतावनी

तेहरान, 11 जनवरी। ईरान में सत्ता के खिलाफ जारी देशव्यापी प्रदर्शनों के बीच तनाव और बढ़ गया है।ईरान में लगभग दो सप्ताह से जारी राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शनों के दौरान हिंसा और दमन की कार्रवाई में अब तक 203 लोगों की मौत हो चुकी है।इंटरनेट और फोन सेवाएं बंद होने से हालात की स्वतंत्र पुष्टि करना मुश्किल हो गया है।

कार्यकर्ताओं के मुताबिक, प्रदर्शनों से जुड़ी हिंसा में अब तक 203 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि करीब 2,600 लोगों को हिरासत में लिया गया है। अमेरिका स्थित ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट न्यूज एजेंसी के अनुसार, प्रदर्शनों में जान गंवाने वालों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। एजेंसी के अनुसार, मृतकों में 162 प्रदर्शनकारी और 41 सुरक्षा बलों के सदस्य शामिल हैं। ईरान सरकार ने प्रदर्शनों में हताहतों की संख्या जारी नहीं की है।

इसी बीच ईरानी संसद के अध्यक्ष मोहम्मद बाकर कालिबाफ ने चेतावनी दी है कि अगर अमेरिका ईरान पर हमला करता है तो अमेरिकी और इज़रायली सैनिकों को भी निशाना बनाया जाएगा। यह चेतावनी ऐसे समय आई है, जब राजधानी तेहरान और देश के दूसरे सबसे बड़े शहरों में प्रदर्शन दो हफ्ते से ज्यादा समय से जारी हैं।

संसद में यह बयान उस वक्त आया, जब सांसद नारेबाजी करते हुए आसन के पास पहुंच गए और अमेरिका मुर्दाबाद के नारे लगाए। विदेश में मौजूद लोगों को आशंका है कि सूचनाओं पर पाबंदी के कारणसुरक्षा बलों के सख्त रुख को बढ़ावा मिल सकता है। इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर प्रदर्शनकारियों के प्रति समर्थन जताया। उन्होंनेकहा कि अमेरिका मदद के लिए तैयार है। अमेरिकी मीडिया रिपोर्ट्सके अनुसार, ट्रंप को ईरान पर संभावित सैन्य कार्रवाई के विकल्प बताए गए हैं, हालांकि अंतिम फैसला नहीं हुआ है। वहीं, अमेरिकी विदेश विभाग ने चेताया कि ट्रंप जो कहते हैं, उस पर अमल भी करते हैं।

- **अमेरिका की ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट न्यूज़ एजेंसी के अनुसार, मृतकों में 162 प्रदर्शनकारी तथा 41 सुरक्षा बलों के सदस्य शामिल हैं।**

## अमेरिका ने सीरिया ...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

दुभाषिया नागरिक मारे गए।

कमांड ने कहा कि ये हमले ''हमारे लड़ाकों के खिलाफ इस्लामिक आतंकवाद को जड़ से खत्म करने, भविष्य में होने वाले हमलों को रोकने और इस इलाके में अमेरिकी और सहयोगी सेनाओं की रक्षा करने के हमारे लगातार प्रतिबद्धता का हिस्सा हैं,'' उन्होंने कहा कि अमरीकी और गठबंधन सेनाएं ''अमेरिका को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करने वाले आतंकवादियों का पीछा करने के लिए दृढ़ हैं।''

## एक्स ने गलती ...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

अश्लील पोस्ट के नहीं हटाने पर आईटी एक्ट के तहत प्लेटफार्म के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी दी थी।

एक्स के आर्टीफिशल इंटेलिजेंस (एआई) टूल ग्रोक व अन्य माध्यमों से महिलाओं की तस्वीर को डालकर उसके साथ अश्लील हरकतें करने का कंटेंट पोस्ट किया जा रहा था। इस मामले में शिवसेना यूबीटी की राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने भी इलेक्ट्रॉनिक्स व आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर कार्रवाई की मांग की थी। एआई टूल के माध्यम से एक्स पर पोस्ट की गई आम महिला की तस्वीरों के साथ इस प्रकार के छेड़छाड़ के मामले सामने आ रहे थे। मंत्रालय सूत्रों का कहना है कि एक्स ने अपनी गलती तो मान ली है और भविष्य में भारत के कानून के हिसाब से प्लेटफार्म के संचालन का भरोसा भी दिया है, लेकिन इस प्रकार के मामले में और सख्त कार्रवाई की जरूरत है। मंत्रालय कार्रवाई से बहुत संतुष्ट नहीं है। मंत्रालय ने एक्स को एआई से बनाए गए कंटेंट के गलत इस्तेमाल पर स्वत: रोक लगाने के लिए टेक्निकल टूल की तैनाती के साथ उन सभी के खातों को समाप्त करने के लिए कहा है। कुछ दिन पहले एक्स प्लेटफार्म पर अश्लील वीडियो के भी मामले सामने आए थे।सरकार की तरफ से भारत में किसी भी इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म पर बच्चों से जुड़े अश्लील कंटेंट को चलाने की सख्त मनाही है।

## प्रधानमंत्री ...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

सोचिए,क्या माहौल रहा होगा। तब हमारे पूर्वजों ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। हमारे पुरखों ने अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया था। मैं दुनियाभर के श्रद्धालुओं को सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा की शुभकामनाएं देता हूं।

पीएम मोदी ने कहा, 72 घंटों तक अनवरण ओंकार का नाद, 72 घंटों का अनवरण मंत्रोच्चार। मैंने देखा, कल रात 1,000 ड्रोन द्वारा, वैदिक गुरुकुलों के 1,000 विद्यार्थियों की उपस्थिति, सोमनाथ के 1,000 वर्षों की गाथा का प्रदर्शन। और आज 108 अश्वों के साथ मंदिर तक शौर्य यात्रा, मंत्रों और भजनों की अद्भुत प्रस्तुति, सबकुछ मंत्र-मुग्ध कर देने वाला है।

## पालम पर तापमान 3 डिग्री पहुँचा

नयी दिल्ली, 11 जनवरी। राजधानी दिल्ली के पालम क्षेत्र में रविवार सुबह को हाल के वर्षों में जनवरी की सबसे ठंडी सुबहों में से एक दर्ज किया गया जहां न्यूनतम तापमान 3.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2010 के बाद यह पालम में दर्ज किया गया दूसरा सबसे कम न्यूनतम तापमान है। इस अवधि में इससे अधिक ठंडा दिन सात जनवरी 2013 को रहा था, जब तापमान 2.6 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया था।

मौसम विभाग (आईएमडी) के अनुसार, पालम में अब तक का सबसे कम न्यूनतम तापमान 11 जनवरी 1967 को दर्ज किया गया था, जब पारा शून्य से 2.2 डिग्री सेल्सियस नीचे चला गया था। रविवार को राष्ट्रीय राजधानी के कई हिस्सों में शीतलहर की स्थिति दर्ज की गई। मौसम विभाग ने कहा कि ठंड का यह दौर अगले कुछ दिनों तक जारी रहने की संभावना है, जिसके मद्देनज़र दिल्ली के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। इस बीच मौसम विभाग ने बताया कि अगले पांच से सात दिनों तक उत्तर-पश्चिम भारत और बिहार में सुबह के समय घना से बहुत घना कोहरा छाए रहने की प्रबल संभावना है।

## सोनिया गांधी को ...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

अस्पताल में भर्ती कराया गया था। डॉक्टरों के अनुसार उनकी सेहत में तेज़ी से हो रहे सुधार के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दी गई है। ग़ौरतलब है कि श्रीमती गांधी ने संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान दिल्ली में बढ़ ते प्रदूषण का मुद्दा उठाया था। पिछले कुछ महीनों में दिल्ली प्रदूषण की वजह से कई लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

## संघ बदल नहीं ...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

दोनों रूप अलग-अलग हैं। फिर भी पेड़ मूल रूप से उसी बीज जैसा है, जिससे वह उगा है।'' भागवत ने कहा कि आरएसएस के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार एक जन्मजात देशभक्त थे और उन्होंने बचपन में ही अपना जीवन राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था।

## भारत आज ...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

यह मिशन पीएसएलवी का 64वां उड़ान मिशन होगा। 260 टन वजनी और 44 मीटर ऊंचा यह रॉकेट अपनी पिछली विफलता के बाद वापसी कर रहा है। 18 मई 2025 को हुए पिछले मिशन में रॉकेट के तीसरे चरण में तकनीकी खराबी आ गई थी, जिसके कारण वह मिशन असफल रहा था।

पीएसएलवी-सी 62मिशन में कुल 15 सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेजे जाएंगे। इनमें एक मुख्य भारतीय सैटेलाइट और 14 अन्य छोटे उपग्रह शामिल हैं। इन 14 में से 8 विदेशी सैटेलाइट हैं, जो फ्रांस, नेपाल, ब्राजील और ब्रिटेन के हैं।

इस मिशन में हैदराबाद की ध्रुवा स्पेस कंपनी पहली बार 7 सैटेलाइट लॉन्च करेगी। यह भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। इसरो ने बताया कि एक पृथ्वी अवलोकन उपग्रह का निर्माण थाईलैंड और ब्रिटेन ने मिलकर किया है। मिशन के लिए 25 घंटे की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है। लॉन्च के करीब 17 मिनट बाद सभी सैटेलाइट को उनकी तय कक्षा में स्थापित कर दिया जाएगा। पूरे मिशन की अवधि दो घंटे से अधिक होगी।

**मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा,** आर.एन.आई. नं. 35214/79, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:-**राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908